

ASHA ARCHIVES 3673

(2)

ॐ नमः श्रीसूर्याय ॥ न कस्यु यथ मीकान् द्वितीयं दशमं चतुर्थं ॥ रतीर्यं तमिह्या कृत्वा तुर्थं सुसह्यकी ॥ यच्च
 मस्तनमयुर्तं षष्ठं लक्ष्म्या दत्तं ॥ सफर्मययुतस्तु न जूष्मकाटि मूच्यत ॥ न वर्मचार्य दया की दशमं निर्वद
 स्मृता स्वर्चमिका दशनाम महास्वर्चनु द्वादश ॥ वृन्दयथा दशस्तु न महावृन्दक तु द्वादश ॥ गं स्वर्चत दशनाः
 ममहा गं स्वर्चतु द्वादश ॥ यद्यसफा दशथा की महायद्य दश ॥ ४ की ॥ उन विगतिका विंक महा विंक सुवि
 गति ॥ न क वि गति यथ नीना स्मि सख्या यचालयत ॥ १ ॥ यं किं ४ गतं सह प्रचायुर्तं लक्ष्म्या काटिका ॥ ४
 च्च दय द्य स्वर्चस्य महास्वर्चत ४ यनी ॥ महायद्यते ४ गं क समुद्रान् र्यं स ह्मका ॥ यत्रा दममृर्तं सख्या
 मसंस्थाय मत ४ यनी ॥ यं किं मानय सर्वं च ह्मय दशगु ॥ २ ॥ नाम ध्या नि सख्या नाम की दश

श्री
 १

दत्तं कात्या सो न उच्यत ॥ मासे द्वादश विवर्धे दिव्यं तदु मूच्यत ॥ सूना सूना नाम न्याय महा वा र्वि
 ययया ना तत षष्ठि षष्ठु ले दिव्यं वर्षमा सूना भवचत द्वादश सह प्रानि वा तु युग मूदा दत्तं ॥ सू
 यादि संख्यया द्वि वि सागत्रय युता रुते ४ संख्यां संख्यां ग सहितं विह्वयं चतु युगी ॥ कृता दीना यव
 स्मृयं धर्मया दय च स्मृया ॥ युगस्य दशमाराग ४ चतु क्रिद क संगु ॥ क्रमा चतु युगी दीनां षष्ठ्या
 ग ४ संख्या साका ४ युगना सफति ४ संका म न न व ४ रा यत ॥ ३ ॥ ॐ नि स्वा सका ल यमा ॥ ॥
 कृता दसंख्या तस्या न १० २०००० सीधिया का जल ज्वव ४ स स न्यय स म न व ४ कल्य ह्मया चतु द्वादश ॥ क
 तय मा ४ कल्या दी सीधिय च दश स्मृत ४ ००० युग सह प्रानि तस सहा न कान क ४ कल्या वा काम

रुद्राकी सच्चिदावती स्मृता । यत्र मायू ४८ तर्तस्य तत्राक्षराणां संख्यया । आयुषा च तर्तस्य ७१ सा क
 ल्यायमादिनः ॥ **॥ निमेष १० काष्ठां ॥ काष्ठा ३० कला ॥ कला ३० दण ॥ दण १२**
मूकुरु ॥ मूकुरु ३० अहानां ॥ अहानां १२ यका ॥ यका २४ गुक्ता ॥ गुक्ता २४ मास ॥ मास
१२ अहो ॥ अहो ३ अयन ॥ अयन २ वर्ष ॥ माघरात्रौ लालिनि ॥ वैशाखे ११ स्वस्वसन्त ॥ अश्लेषा ११ यी ॥
धनं ७ रुद्राया ७ यत्र यादिना ॥ अथ ७ रात्रि ११ ॥ अथ ११ काठिक ११ नद ॥ मार्ग ११ लघु ११ मन्त
॥ अथ ११ अथ ११ यत्र यादिना ॥ अथ ११ यत्र यादिना ॥ ॥ मास १२ वर्ष ११ दिव्यदिन ११ ॥ ॥ निमेषादि
यमा ॥ ॥ सा १० यल ॥ यल १० कला ॥ कला १० घटि ॥ घटि २ मूकुरु ॥ १ ॥ या १० विना ११ ॥ विना ११

ॐ द्यति ॥ द्यति ॐ अहो नारा अहो नारा ३० मास ॥ मास १२ वर्ष ॥ २ ॥ या ६ विना ॥ विना ॥ ६ ना
 ॥ ना ॥ ६ अहो नारा ॥ अहो नारा ३० मास ॥ सावर्ग मास सूर्य उदय ३० ॥ सावर्ग मास तिथि ३० यति यदा
 दि अमावास्या न ॥ सोम मास संप्रदा नि नित्य कौ सै नि द्वा थू कौ द्वा ता ॥ ३ ॥ मास १२ वर्ष ॥ वर्ष १ दिव्य अहो
 नारा ॥ दवया दिन ॥ अमूनया नाति ॥ अमूनया दिन दवया नाति ॥ दिव्य अहो नारा ६ ॥ षष्ठि संप्रदा
 ॥ षष्ठि संप्रदा ६ दिव्य वर्ष ३६० ॥ दिव्य वर्ष १२००० चतुर्युग ३३२०००० ॥ चतुर्युग ११ मन्वन्तर ॥ म
 नू १३ कल्प ॥ चतुर्युग जित्वाथ स्य सत्य ११२०००० ॥ अता १२००००० ॥ द्वायन ६७०००० ॥ कलि ३३२
 ००० ॥ ॥ द्वायन संधि १३७०००० ॥ अता संधि १०००००० ॥ द्वायन संधि १२०००० ॥ कलि संधि ३६०००० ॥ च

उर्युगसहस्रनवक्रदिन३२०००००००॥वक्रअरुणानाग८६०००००००॥वक्रमास२२२२००००
 ००००॥वक्रवर्ष३११०३०००००००००॥वक्रगतायु३११०३०००००००००००॥**वृत्ति**वासयमार्ग५॥
 सावनदिन१२११२११८२८॥चांद्रनक्षत्र१२८२२३१८२८॥चांद्रवास१६०३०००००८०॥श्रुतिमास
 १२२३३३६॥तिथिक्रय२२०८२२२२॥नविमास२१८३०००००॥नक्षत्रकल्यगतवर्ष१२२२८८००००॥
 ॥ ॥ कलिगतायु३१११॥कलिअरुर्नल१३१२२६२॥धौलिसारुर्गल१११२०३८६३१०॥नामकाह
 र्नल१०३२३८२३२००॥वसिष्ठाहर्नल१०६२३६२२०२२२॥सूर्यसिद्धान्ताहर्नल११३३०३६१२१
 २२॥वक्रसिद्धान्ताहर्नल१२०८३६८१८२८२॥आदिब्रह्मनतासूर्यवसिष्ठाशामकनथाधौलि

गान्धर्वयज्ञेन सिद्धान्तपञ्चकनथा॥ॐ निसिद्धान्तपञ्चकी॥ ॥ निमेष १८ काष्ठा॥ निमेष २३० क
ला॥ निमेष १६२०० कला॥ निमेष १२३३०० मूकुरा॥ निमेष २८३२००० श्रुतानां॥ निमेष ११५२६०००० मास॥
॥ निमेष २०२२६२०००० वर्ष॥ ॥ स्वास १ यात्रा॥ स्वास ४ विद्यति॥ स्वास ६० कला॥ स्वास ३६० द्यति॥ स्वास
२१६०० श्रुतानां॥ स्वास ६३८०० मास॥ स्वास ११११६००० वर्ष॥ ॥ तथा समन्ति तन्नास्वपुखाद्याद
या॥ वर्ष १००॥ मास १२००॥ दिन ३६०००॥ द्यति २१६००००॥ विद्यति १२२६०००००॥ यात्रा ११११६०००००॥
॥ ॥ न कश्चैकवथा लुप्यति ४ यवदातिका॥ यत्पुत्रेणियुले सन्ने ४ क्रमाद्याख्या ४ यथा क्व॥ स
नामूर्खगुल्मगालोवाहिनीयुतनाचमू॥ गूनी किनी दणनी किन्यक्षादिभ्यधसम्यदि॥ मूकादिः

लीसंख्यासथ॥ द्वाविंशति सरुप्रस्था प्रथमार्हस्ति नाम धि। लक्रमकं यथा तीर्त्तां सरुप्रालियूनव्रवास
षष्ठिकं सरुप्रस्था रूतगमनां समसतं नतत्राक्राहिणीयुक्ता रानतयत्रिकीर्तिता॥ ॥ गुण ३॥ लि
थ्यं १०॥ यथर्मद्विगुणं याकी विगुणं यवगुणं यूनयवगुणं दत्त्वा वीजं रुवति नान्यथा॥ गुण २॥ गुण
३॥ गुण ३॥ गुण ३॥ वीजसंख्या॥ ॥ नवयलमाटीं ८ सजावे नवलखणी ८ यवसजावे। मृसमा
सानिखखाय कनकवनि सथ वृत्ररूनाय॥ ॥ यवलकूतनयावमायुवदसथ॥ ॥ यडाष्टनव
सफासुवस्त्रममुच्यते। यस्तु रुडाष्टवदादि वक्रजातस्य हाय ८॥ २३८८२ १८०८८ १८८१॥
वक्रजाताय॥ ॥ गंगीनागनवाद्यस्तु न्यत्र सयहा ॥ मृगं कंचति विह्वया वलिवन्धनव

सना॥१२४०८८५२७१॥वलिर्वधनाद्य॥ ॥चन्द्रमावसूनीयादिमनुवानयमन्दवशंलीकेश्वरा
द॥कथितानयालाद्युसीयुत॥१२४०९२७१॥वावणाद्य॥ ॥वृद्धाक्ष्यरान्दीयादिवसनाद्यव
वत्सना॥करुण्यग्रहवक्त्रेनरावन॥कलिसैरुर्क॥नक्तूनियग्रहगणीष्टकाद्यक्ष्यकीर्ति॥य
तायब्रह्मन्तथाभगवदाक्षिसिख्या॥ ॥८५२७१॥नाद्यवाद्य॥ ॥३२७१॥रावनाद्य॥ ॥१२२७
ष्टकाद्य॥ ॥२३०५॥तायब्रह्माद्य॥ ॥रुनागभक्तद्रुतासासफार्थकायमस्त्रजुगी॥१॥कलिविक्र
मणकवर्षानियालाद्यान्यूनाक्रमस॥कल्याद्यविक्रमाद्यगकाद्यनयालसैवत्सनलगतीठावल्लय
क॥कलि३२७१॥विक्रमेत्३०॥गक८०२॥ ॥तीनिष्पुन्यंनमहिक्वदिक्रवसूत्रसवदकनंशु

लिङ्ग। जन्तु जानक शोयुग संका वीग स रुय न ता लिङ्ग लका ॥ २१००००॥ ८ न ६ व ३ क २ यु ० ॥ च ३ यु ० ग ३
 ॥ ॥ निषट् षट् यै च की रु यै मय मका निधीयत एय लिङ्ग। मुर्ल कला कला रुन ल मत्युता ॥ ३३३३
 ३३३३३३३३॥ गुण ३३॥ स न सती क म रु न ल मया ॥ ॥ अष्ट लिङ्ग र्ग नि र्ग म क स्व स य ल स वि
 स ग्ग न्य म क। व क य न ल नि व र ग ण थ स ली हि ली क्ति न ना नि च की ॥ १००००००००१११११११०११००
 ०८॥ रा ग र ॥ च का ॥ ए नि ४ या ना व ता ४ य र्क यै च रि ४ स क सा व सा ४ स क रि न्नि व रु सा थ न व रि की नि
 व रि ता ४। वा ज क न्या वि वा हा र्थ श न त ल त मा च न त ॥ टं का स न क्ति न म ग ल श न क्ति ल य क ॥ टं ३ या
 ना व त ८ ॥ टं ४ सा न स न ॥ टं १ रु स र ॥ टं १ म य न ३ ॥ गुण ३ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ३ ॥ ॥ यै च का वा यि ४ म ग्ग न्य स

३

फाद स्व व रु स मा मी अ ० अ ० अ ४ ॥ १८२२०१ ॥ गुण १३ ॥ उ ल्या स्व या थ न ल य क ॥ ॥ ह रु नि रु रु
 नि अ उ न व रु रु नि अ। ग र्ग ल रु या क्ति र्ग ल रु ॥ य स्वा व रु स मा मी अ ० अ ० अ ४ ॥ १८१०१०१२१८
 ॥ या या न या या न गुण ॥ ॥ ति ली स मू ड धृ ति ना ठि का र्थ म क य न ला क क ला सू ति र्वा या ग द्वि
 यु र्ग म ति धि स र्वा रु नि व न क य क्ति क म स र्वा य ति ४ ॥ ॥ ति धि क्ति दिन ३ र्ग न च टि १८ ॥ न क र्ग क्ति दिन
 ३ र्ग न च टि १३ ॥ या ग क्ति दिन २ र्ग न च टि २ या य च टि १८ ॥ दी क्ति लि व या ति धि न क र्ग या ग ॥ वा न या
 क म ला ॥ ॥ वर्ष यै च गु र्ग क्ति ला य या द ग य र्ग रु व त ॥ अ र्ग वि र्ग रु व रु मी ॥ ग र्ग क्ति व क मा दि ला त ॥ वा
 ना त ल च व र्ग स र्ग म र्ग वि र्ग म त ४ उ य ड् य स र्ग स र्ग क म ग य नि कि र्ति ॥ ॥ वा न का ति थ यो न

द्योति कागनः नन्दवधवसानां च नदाकृत्वा नविसंक्रान्ति नवव ॥ वृषस्य स्वामि ३० मिथुन नक्षत्रं
 कर्क निनन्द्या २३ रुनि वदरान् १२३। कन्यासं गावा ल ग नन्दवध १२२ ॥ तुलानसा १०८ नलि नृवा
 धि २१६ ॥ वायाधमि २३२ मकनसूला २१६ कीरु निस्वामि ३०३ मषवदका ३२३ ॥ मषस्य धर्मा
 गधनजया ३६३ शुक्ल संख्या नविसंक्रमस्य ॥ ॥ सल्लुवा निक्क ज ४ पूर्व वक्ष्यथा न सफति ४। मा
 र्गमिन्द्र पक्षा सै न कर्वि ॥ गल न ४ गती ॥ न कर्वि ॥ गल न ४ गती ॥ न कर्वि ॥ गल न ४ गती ॥
 रु ४ पूर्व सपय रिं गति ४ ॥ युवा दिय कि न दार्क वक्ष नृपारु न ४ गती ॥ न दार्क मार्ग ग जी व ४ न कर्वि
 स नार्क ॥ ॥ शुक्रा दय य रा अ वि सा र्ग त द क पूर्व क ॥ न वन्द ४ यमि मा स दिक् पूर्व स ना ग य व

ता ४ ॥ युवा दिये कारु न गती वक्ष व दानि वन्द मा ॥ मा र्ग निरु मि दि ॥ यमि मा स य मा जय ४ ॥ वक्ष
 ययमि मा स तथ युवा दिय विवा रु शुक्रा वक्ष व नृथो वक्ष वक्ष य न य रा ४ ॥ ॥ नित्य रा दय मा स
 वक्ष मा ग नि मा नी ॥ दिन स र्वा ॥ ॥ स्वयं वक्ष र्ग नि वि ॥ गल वक्ष ग के ४ स्व वि रि स फ रि थ ॥ विधा क
 ती कि न य थ क्र म ल र्वा ग नि रि रु र्ग ला य वा ते ४ ॥ रिं ग ल र्वा जित स फ रि थ व र्वा धि र्मा स प ति
 दि न र्ग ॥ व र्वा धि र्मा स नृ व ४ ग नि थ र्मा म ४ गित थ वृ ह स र्वा ती ना ॥ मा सा धि था क्क ४ कू ज जी व र्मा नी
 ग र्मा क सा मा स ज रा ग ति ना ॥ दि ना धि र्मा स व च ल र्मा म वृ ध य जी व य गित ४ ग नि थ ॥ ॥ गल क य
 घा ति धि न कू यू ता ४ स्व न सा नि रि ४ क मा न स्व गु ले ४ स्वा क वृ य ना कान र्गे वि रु र्वा व र्मा स का वि वि

धागासूत्रवृक्षलोत्रिकमिजुलितगलिजीवावर्षाधिया॥मासाधियाविरावथरानूरुसूतजीवाकृज
 दूधवृक्षा॥बन्धासारुनवृक्षापर्वणसकदवताक्रमण॥वृक्षगणितकवर्ववृक्षानियमाथ
 विरुथा॥नवदणनगद्याद्विगुणसकृताववावृथा॥सगनायाम्यजायायवृषा॥सकलि॥नि
 द्रो॥वृषाधिया॥मासाधियाधिवसाधियापर्वधियातया॥॥स्वस्वयविशृंगलरुष्यनसनदाकृला
 जिनीलवृवाहर्गणकयस्वधृयागगमाहवत॥तल्लवृसकलि॥रुश्री॥गवृक्षदूधवनार्त्त॥
 नगववृक्षानि र्यमा॥यवृधिया॥क्रमांत॥सकवृधियातया॥॥विगुलितगकस
 वत्सनकालविमिष्टितयकगवा॥गलितयदयूर्त॥रुलितयलुतनद्रसकविराजितवर्षागिष्यक

पुंजलयावह॥ गंकस्य काल विगुलीकृतानि द्विवाचवदाष्टसमन्वितानि । राजाचमन्कीचवर्षाधि
 यस्यान्मासाधियस्यान्मूलिनाकृतानि ॥ गंकस्य कालं विगुलीकृतं यकार्थवदाष्टसमन्वितं ॥ राजा
 चमन्कीयनिवाचकं गंगगणस्य विद्यालकं ॥ वर्षाणि च कर्जुजलाधिया ॥ ॥ विगुलीकलिवर्ष
 वदित्वा उर्ध्वकण्ठप्रथमा अष्टाद्वियुतलीलायं राजाचमन्कीयकीर्तिता ॥ गंककाशगुलितायामादिमिष्ट
 मूलिनाकृती ॥ गङ्गाधरानूकमादाजाचतुर्थस्यमन्कीवित्ता अष्टयिगुं नामदत्तं नगार्थमूनिनाकृती ॥ ग
 ङ्गाधरानूकमादाजाचतुर्थस्यमन्कीवित्ता ॥ राजाचमन्की ॥ ॥ गंकनृपकालकृतान्गुलिनीयथूयग
 उकादिवाक्यसहितं । सफविराजितेगुलायविगणस्यवानिगंकालवृद्धादिगालिती ॥ रुद्रनी ॥ ॥

वाजाजलाधियल्लोकामन्तीकलुधियस्तथावर्षाधियाकाठयाला। रुधुनीमासगन्धयो॥ नतवके
 वरुवति॥ ॥ कलिवर्षगर्तयिलुं सफुर्तुयमयाजिनी। ताननराजिनीलज्वीलज्वाधियादिराजय
 न॥ मकाधियति॥ ॥ गणकवागुर्लदत्तावधनेवविराजयत॥ गणधनकायनमद्यआवर्कदि
 वेदुसयी॥ गणकवागमिसंयुक्तीवधनेवविराजिनी। गणधनमद्यविजानीयादावर्कदिगलकमात
 ॥ गणकीनवचल्ययुर्तसलिलदत्तगणधनकधित्ती। आवर्ककसम्वर्ककयुक्तीनावर्ककदालसंघाशा
 गणकीनामसंयुक्तीवधरागसमूहवतरगणधनमद्यविजानीयादावर्कदिवदुसयी॥ आवर्कनि
 ऊर्लयाकीसम्वर्कवायुधुवितशपूकनयिनिविदुष्टिडा। लवृष्टिवनगत॥ आवर्ककसाइविचि
 ता॥

एवृष्टिः सवर्ककाखनिजलददाति॥ ययूकवावासजलददाति। डालमुधुधुर्कनूतवसूधना॥
 मद्य॥ ॥ अष्टमासिसिनेयकदगमीवावरुयुर्ती। वसूरिर्कजित॥ गणधनकायनमद्यविजानीयादावर्कदिगलकमात
 अष्टसिनेयकदगम्यानिधिरुयुर्ती। एकीकृत्वावसारुर्गी। गणधनरुलगुरुगुरु॥ एकीकृत्वावसारुर्गी। गणधनरुलगुरुगुरु॥
 मात्रागुह्यजानी॥ द्रस्वावसारुर्गी। गणधनरुलगुरुगुरु॥ एकीकृत्वावसारुर्गी। गणधनरुलगुरुगुरु॥
 ली॥ चतुर्थः कूसागर्तयुजामात्रागुह्यसूखी॥ ययूकममधुसागर्तसांधदायकनातिसानयीजा॥ य
 लवर्कसागर्तनवत्रागयीजा॥ सकर्मगंधसागर्तआत्रागुह्यसूखी॥ अष्टमकीनसागर्तयुष्टिलक
 यजानी॥ दधिकावस्तथासयिः कूमधुनभवत। लवर्कगंधकीनयसमूहोष्टीयकीर्तिता॥ सम

उरुली ॥ ॥ हिमादिभनूमदावकेलासमलयसुथागंधमादनमाहृद्यधीयवर्तमितिकमात्रा ॥ अनका
 वासुकीवैवतककथाथककठिठायप्रवृहस्यधर्गखाकूलिकाशेयकीर्तिताशादधिसागनमानयः
 हिमलोलादिताप्रयशशूनकादिकमानागमस्वस्वसंवधिनसदाशासमूहयवर्तनागरुली ॥ ॥ गमका
 वसागिसंयुक्तवसरिरुगमाहृन्नत ॥ अनकादिकमनेवअशोनागमध्यकीर्तिताशा ॥ अनकावासुकी
 यधमहायधश्चतककशंकूलिकककठिठगंखाअशोनागमध्यकीर्तिताशा ॥ अशुकुलीनागम ॥ ॥ गंकि
 कालयूतावृद्धअकैसुहाजितयूनशाणशनागविजानीयानागवाजाविधायन ॥ विष्णुदानिन्दगमल
 यकभुतिश्चविदूषवावासुकीतककथेवकामिलावतुलाविदूहाहममालीजलल्यथवदयैशविष

१०

यवुशानतदादशनामानिनागवाजाविधायन ॥ नागवाजा ॥ ॥ गमक ॥ गमकसंयुक्तमूनिरिरुगमा
 हृन्नत ॥ आवहादिकमनेवसकवागमध्यकीर्तिताशा ॥ आवहृथवहृथेवसंवहृविहृसुथा ॥ उदहृनि
 वहृवायूसकवागमध्यकीर्तिताशा ॥ सकवायू ॥ ॥ गमकस्यकालविगुर्णविधायसकावनिष्टकिलनाग
 णर्षादिध्रीकृतयकैसमवित्तैर्यवकमादिगतिकाद्यवसुगा ॥ गमकावक्रिगुणनगेदतमथा ॥ णर्षय
 मिनाहृनवानाद्यजलयादियुवकमिदयार्कतत ॥ युववत ॥ ॥ वध्वधिन्यरु ॥ निगीतलमथमजानि
 लावृद्धयहृनिविद्यहृसंधयश्चकथितवसत्यनूतनी ॥ ॥ गमकवक्रिहृतैहृत्वासकहृरुगमाहृन्नत
 यकैर्षद्विगुर्णहृत्वायकैरिहृसहृयाजयत ॥ गमकस्यविगुर्णहृत्वाहृगंसकादिमाहृन्नत ॥ णर्षयस्यदि

गुर्लक्ष्मिपञ्चरि० सद्यः जयतु ॥ वर्षाभिन्नासुधागीतलुगडुक्कैमानुत० प्रजावृद्धिकर (केवत्राजवि
 ग्रहमवचा ॥ वर्षाभिन्नीगिनिर्लेलाभूवायू० प्रजात्यलिलयैवयुद्धी ॥ सर्वोक्तकीकृतरागनयेत्तुर्वि
 वस्यातकमूल्यमनयतु ॥ याचिंक्कानिवावात्रा नोवात्रामवर्णजनि० यदेणययवतत्तास्ते वर्षाशादिदिही
 नत० ॥ श्रीवरीवैतस्मधः कृयादिहीनायाजविग्रहातात्राजविग्रहतन्यापित्रीनना ॥ १५ ॥ श्रीहीनत० ॥ ३५ ॥
 ककुत्थायुलम० स्यात्कथमावृतवलता ॥ प्रजावृद्धिसंभोवृद्धाविह्वयासर्वदावृष्टे ॥ गुल्यलतावृद्धा ॥
 वर्षादिदि० तिग्रवसु ॥ ॥ भूयमनायावैतुक्केप्रतियमस्व० स्याद्दानासुवर्षाभियति० यदिष्टा ॥ या
 मवर्षकादिदिनगमनी ॥ गण्यप्रियाककटसंक्रम० स्यात् ॥ वैष्णवगुक्कादगमीरुलुनीयत्रिकीर्तिता

१॥ अक्षयगुक्कादगमीवात्रामनीतिगीयत ॥ ॥ ॥ भवजसितयक्केस्यामक्कादिदिनयागत० वर्षरु
 वयू० क्रमतात्राजानानकपृवका० वासूकिस्तककोयेवककटिलद्युयद्रक० महायमाथर्गस्वयसके
 तनागसंरुका० ॥ ॥ भूयमनाग० ॥ ॥ गतानिवर्षस्ययुगस्यमानेगुक्केर्तुविष्णुगुर्लक्ष्मिः
 योत्ताततादिधास्तुगुगयचुर्लिखस्वाकवयद्विराजयच्च ॥ रुलेनडड्वयूयैदिधास्तुनूडगुल्यः
 स्वगयन्दुराजीमार्कुरुवदगुलकसंख्यैर्यनगनकगुलकैरुक्कायौत् ॥ ३५ ॥ यूरुकीनवतिर्विरुकीत
 कागणैरुलमादिगानि ॥ ॥ भूयकवि० सफयदासुगवैरुयैकर्यविग्रहवन्निमृल्युगद्वयचदु० यक्केय
 उवणवैरुक्केभूनाग्यजयक्केवृद्धिभायगरुली ॥ ॥ पृवन्तिकालजगतादियलि० मध्वंगतवात्य

[illegible]

स्यात्तथैवो माश्वष्टवर्षाधियनसुखिनारुतन्नि ॥ वर्षाधियनिरुत्त ॥ ॥ यद्यमष्टदलीकृत्वा वि
 वाकृत्वागुदियली ॥ द्विधाविदियलमश्च कृत्वा सहायकल्यथत ॥ पूर्वादिदियलमश्च समुद्यतस्य यावत्
 यावत्सधिकककयां नक्तकूलनंगमत ४ यवी ॥ कलिकादिलिखेत्युर्वे समुद्रादो वितकण १ मधमासस्य
 सिकाको ह्यतिवृष्ट १ गुरागुर ॥ रागायायादिह नीत्यवान् लयमा १ नकागिरुमध्यथा ह्ययवदिमद्या न
 नाधवसूरुवेतत्समुद्राद्वर्या ॥ याकाथदूरुमुलरायमदिर्तकूको चरुकीयून १ जीजीवग्ननराषितेय
 नत १ कूलाष्टकीयत्यनी ॥ अतिवृष्टि १ समुद्रस्यात्सूवृष्टि १ सन्निककया १ कूलगुचिणितावृष्टि नना वृष्टि
 पुयवृते ॥ १००॥ निसमुद्रवकी ॥ ॥ गतानिवर्षाणि नक्तकालात्संगुल्यनूद्ये गुणथच्चतुर्लि १ यमाष्टयि

73

[illegible]

जनहितार्थं वसविरुद्विष्टः पुरुषः तिस्रान्ना जायते यस्तदा नीतिः ॥ ~~विष्णुविष्णुसंवादाः~~ ॥ षष्ठा
 दशमविष्णुसंवादाः ॥ अदिमध्याह्ननामिष्याः ॥ वक्राविष्णुनिवाचनेन पुरुषसाम्याधमकमात् ॥ ॥ आद्यतुवि
 षातिवाक्सी द्वितीयाविष्णुवीर्यता ॥ तृतीयात्रोदयेवयो ॥ अष्टमध्याधमकमात् ॥ उरुमावक्रविष्णुयाम
 धमाविष्णुविष्णुका ॥ अथमावक्रविष्णुव सिद्धवा ॥ रुरुलीमरुत ॥ ~~नितिनिवि~~ ॥ ॥ षष्ठादशदशसंवादाः ॥
 द्विर्विष्णवेतदुधदुधयगानियुगमाननु यववसंयुगमधिया ॥ रुत्रिर्गुर्विद्वदरुना ॥ त्वष्टादिर्वधये
 त्रिकशविष्णुदूककालनी सत्याख्यादादशरुग ॥ युगंरुवदत्तवयवकन युगमिति द्वादशवर्षसि
 ष्या ॥ रुवकितस्वामिदवताश्चक्रमजवक्रानिमृतिखलीता ॥ विष्णुजीव ॥ १८ ॥ कोदरुनत्वष्टादिर्वधये

18

पितृवशाविष्णुसामय्यद्वकालनीना सत्याख्यावत्तुन्यरुग ॥ ~~नितिद्वदशयुगं~~ ॥ ॥ युगसम्वत्सव ॥ पूर्व
 यनीनावानुवत्सना ॥ अर्चवकासकुमानाथा वक्रकन्दुविधिः ॥ निवशासम्वत्सव ॥ यथमक ॥ यत्रिवत्सवान्य
 रुमादिउन्विदितिपूर्वपादा ॥ यत्रस्य ॥ उर्वयुगसूकलसूतदीयनाथा वक्रकलीतगुविनिस्त्रिणि
 वा ॥ क्रम ॥ ॥ यायधिरुस्यसम्वर्द्धक्यात्सर्वतस्रस्त्रिल ॥ मथाधयनवृद्धीना विद्याया ॥ योष्टिकस्यय ॥
 वेजिकाकृतयातिक कर्मान्यथसौक्तिकमर्निस्त्रिल ॥ यायधिरुनितथ ॥ यत्रिवत्सवसंस्त्रिभक्यात्
 ॥ वाक्रकलत्याधियत्यस्यदानस्यवक्रकलपिच ॥ कर्मदावत्सवक्यात्सूत्रयायाश्चसंस्त्रिती ॥ कर्मानिनी
 द्युसानथ ॥ वरु ॥ संयागवक्तिन ॥ उर्वयायामिवायानि विदधीतानुवत्सव ॥ ॥ दत्तस्यरुवलो सम्वर्द्ध

राजिकुर्वीताद्यमनरुनयूकानवधायानिचान्यानि॥ॐ नित्यगयवाक्य॥ ॥ नक्षत्रमहादयम
 स्मिवायातियनसूनमन्दी॥ तत्संस्तुवकवीवर्षमासंक्रमणेव॥ वर्षादिकार्लिकादीन्याग्रुत्वयात्वथा
 गिनि।क्रमसन्निरुक्तेयक्रममूपाहमह्यक्रमद्वर्ग॥ कार्लिकादिषुसंयागकार्लिकादिद्वयंद्वयं।
 ह्यायाह्यायक्रममध्यगुयामाससुयसमृता॥ॐ नितिमहावर्ष॥ ॥ कर्कटोदिवधनवीरुतातर्थादिक्रि
 यनी।मकनामिधुर्नयावदूरुनायलमवत॥ रातामकिनसंक्रान्ति॥ सन्मासासूरुनायली।कक्षादिमुत
 लयतस्यातुसन्मासादक्रिलयली॥ गिनिनयुवमृदुयसूरुनक्रयनमादुनरुग्यतदामनी।रुवति
 दक्रिलमन्यदुपयनिगदितावजनीमनूताक्षसा॥ ॥ गुरुयवगणितदगयतिष्ठाविवाहलीवत

१३

तवधपूर्वसोम्यायनेकमगुरुविधयंयमर्हिततत्त्वतुदक्रिलगु।कथयन्तिवेधविकमूदगय
 लीतपदानानिकुर्वीतयसन्मासवसमाजसूनयुजनादीनि॥ वाक्कथयानकीयन्नयानिक्रियवनालिच
 तातानिसर्वालिकमालिविदधीभारुनायल॥ दक्रिलमयलीयसुतपत्रहान्दक्षिणयक्रुतानि।विद्याया
 संक्रुयाहृदयिरुदवकायालि॥ॐ नित्यगयवाक्य॥ ॥ मृगदिनागिद्वयंरानूरागतुषउरुवसू॥ गि
 निनावसन्॥ यीषग्यवयचिगनञ्चतद्वधमकनामाकथितापुष॥ मानूतागिद्विदगयतिविध्वद
 वा॥ यजायतिद्विषु॥ॐ नितिनिगिद्वयंरतीनक्रिमादरुनांमृता॥ यतय॥ ॥ गिनिनमृगकीशुवसनी
 मीनमषया॥ यीषीरुषनयूल्मउवयाकर्कटसिंहया॥ गनकन्यागुलायाकाहमनीवधिकेधनी।

मयूयनां विष्णुस्थायका विष्णुधिवता ॥ निनिर्विमाद्यरुतुया वसन्तमधूमाधवा ऊहासाटसुभाया
भववधिवरायया ॥ सवदितान्विका रिको रुमन्तमार्गयोसया ॥ मयूयका निदिया दू नयनकमयुग
यी ॥ गयगलयनिवन्धायानिनिनिववसन्तमया ॥ विग्रहोदिककर्मयनस्य यूपानिकामय
॥ गीष्मउयवनाजन्तो तथमयदमनानिवा ॥ तद्वत्कम्पानिके द्वीतयन ॥ सभायकानिवा ॥ यणुयुनयुनय
स्ययथाद्यायिनिवादिनी ॥ तत्सर्वकर्मकूर्वातवर्षात्वन्यद्वतादृशी ॥ कुर्याच्चनयवैश्वर्यय ॥ एतद्वयं
समागुर्य ॥ कम्पानिर्वर्तनयनयादिनीवर्षयलक्ष्म ॥ विशायाद्यामयूका निनित्ययूकानियानिवा
अनरुताखिलायवतानिहमन्तनामनि ॥ ॐ निसहस्रकनका ॥ ॥ वाक्कदेवतथवैश्यप्राजाय

१३

खगुनासुथा ॥ सोनचरणावर्तवाद्यमुक्तनामानिर्वेनवा ॥ चतुर्लिखिवदहाना सोनवाद्यकसावन ॥ वादस्य
थनसद्यर्थरुयनायुनिसस ॥ नवमासा ॥ ॥ वैश्वेणस्यस्यस्यसाटस्यवरायया ॥ मयूयका रिक
कामान्तेयोस्वमाद्याख्यरुतुय ॥ विगविष्णुस्वाययप्रवारुडा ॥ निरुहिका ॥ मयूयमयारुतुकमात
मासाधिवता ॥ मीधेभवेवश्मिन्ना कणसिराकयुगुका ॥ विमाधयोममाकूरा सोनमासविकमात ॥
यस्यविधिर्मसिम्पानिवाद्य सोनकथरासुनवागिवावाता ॥ विंशदिनसावणसंक्रमा दू न्नीकमिन्धारुग
वज्रमल ॥ मयूयस्यमाधवसंक्रितयुक्ता ॥ ॐ विष्णुथनशोनरुयो ॥ तथेवदुर्जयसह ॥ सहस्योतयस्य
स्यादिविदिकमल ॥ मीनादिष्ठा नविथया मान्तरुकरुवरुत ॥ तद्वत्वाद्यमसामासा ॥ येनायाद्यायस्य

ता॥ सोम वामा मासि स्थित्य अक्षय्या सावले दिवसा ॥ मासे ४ युथ कृष्णार्द्र ४ सयवहा प्रातला कस्या ॥
युगवर्ष विषुवदयन त्वरुर्निष्ठा वृद्धि कानय ४ सोनात् तिथि कवत्ताधिक मासा नवनाय च क्रियाश्च
द्यात् ॥ यक्षसावला मासं गुरु गह्वर वीसत्रिकित्सा ॥ सावनमाना ४ या ४ प्रायश्चित्त क्रियाश्च ॥ अक्षय्या
कृते नक्षत्रनाक्षत्रमानमीति ॥ उर्वसा सविता ४ सोम वासिष्ठ यो लिसाश्च ॥ ग्रामकर्म ४ कथिता
वाद्यात्पूर्व क्रिया सकल ॥ खत नियमस्तानां सर्वे ४ नक्षत्रा मासा ॥ विवाहाद्यो स्मृत ४ सोना यक्षाद्यो सा
वन स्मृत ॥ आदिकं पिरुकाद्यं मास अक्षय्य मसं स्मृत ॥ रुक्म कर्म न नीतिनाक्षत्रादि न मन्त्रानां कर्म
नाम्ना मासा मुहूर्त्त ४ यच्चान्यागता ॥ कार्तिकादिषु र्मथांग कार्तिकादि चर्यं चर्यं ॥ अथान्यायान्याय चर्यं

मन्त्र उवाच ॥ मासास्तु यस्मिन् ॥ १॥ ॥ निमासयकवर्ण ॥ ॥ स्वनामनक्षत्रस्वनामनाथमासाश्च यक्षावपि दवयि
त्यो ॥ उरोनिबूको स्वलक्ष्मणकृष्णगुरुगुरुकर्मविनीयणको ॥ ॥ सोम्यायत्नगुरुकृष्णायाम्यायत्ननम
मडकशरुलग्नकर्मतायिचयक्षागर्भदिलिम्भनिरि ॥ ॥ यस्मिन् कुरुवत्यर्चयकथागुरुकृष्णया ॥
तद्वक्तव्यतावूको तावूरावयिस्त्रनिरि ॥ ॥ ॥ नित्यकृषकवर्ण ॥ ॥ यत्तियदाद्वितीयाचरुतीर्यचिचउ
थिका ॥ र्यचमीषष्टिकासकं अष्टमीनवमीदिनी ॥ ॥ नकादशीद्वादशीचपथादशचतुर्दशी ॥ चूर्णमाणीति
कृष्णचूर्णमावा ॥ ॥ अथकीर्तिता ॥ ॥ कमलजविष्णुहनुमन्मङ्गलकृष्णकृष्णकंवसुजग ॥ ॥ धर्मम
विरुमन्मथकलशाविध्वनितिथियतय ॥ ॥ यितत्रामांवास्याया ॥ ॥ संह्रासदृष्ट ॥ ॥ यत्ते ॥ क्रिया ॥ काय्या ॥ कसि

ददन्ति धनं दयति हृतीया तथा दद्यात् ॥ तिथि या शुभं मुखविष्णु हविष्कृता यमः ॥ गीत दीप्ति विष्णु रव
वक्रिणे ॥ वसुना गधर्म शिवति म वग्मथाम्मदनै कलि सुदनू विश्वः ॥ तिथि हि दर्श संहित वि
हृन् ॥ ह्यनू ह्यधी श्वनान ॥ तथा दणी हृतीया ता स्मृतं विरुथा यमः ॥ ॥ यद्यश्च न विनी विष्णु विष्णु
मी मधुसूदनः ॥ श्री कृति नि सुध नूडा दक्षि ॥ ॥ वृषा तगा यजः ॥ ॥ अ ॥ व ॥ वा नू ॥ ॥ अ ॥ यति विनि
कमात् ॥ ॥ पुत्रं यं कुरुव ह्यता सिधाना मधि दवता ॥ ॥ कृष्ण यक्ष सिधाना म्य वदितं पुत्रं यमा ॥ यमानि
लानिर्मति श्र दक्षायं यं यन वन ॥ ॥ अलं यना मृदिव ॥ ॥ अ ॥ विष्णु मृदिव ॥ ॥ अ ॥ यितं यं यति निदिष्ट
कमालि ध्य धि दवता ॥ ॥ हृतीया यां तथा दद्यात् ॥ ॥ वृद्धः ॥ ॥ अ ॥ यना प्रियः ॥ ॥ अ ॥ यनं यं यि ग ॥ ॥ अ ॥ यनं यमस

कर्म मूनीनाम् ॥ अग्निर्वक्राडमाविद्य नागलक्ष्म्या कृष्णीयनाशः ॥ दुर्गमयमाविश्व हनिः ॥ कामः सर्वदूषव
ता ॥ यूनालमतयसिद्ध ॥ तिथिः १ गनी नं तिथि नव साधनं तिथि यमार्ण तिथि नव राषणी ॥ तिथि विना
वगणी नदृश्यत विनन्दना या विन कर्म सिद्धि ॥ ॥ वक्रि विवि विवि विनि विना गलागः ॥ रुणी विना शोदिन
कर्म हगः ॥ दुर्गमकका विश्व हनि सनाया सर्व १ गणी वात यूनाल दृष्टा ॥ ॥ यत्कार्यं न कर्तुं न देव सा
तिथि यत्कार्यं कर्तुं न मूक र्दृष्ट तथा सिद्धि कर्तव्यता सदृशी ॥ ॥ नद्या रुदा विजया अका यूर्ध्वनाम
सदृश रुला ॥ नून स मका सिधाय १ गुक्क रुक्क प्रतिया सा ॥ नद्या व रुदा व जया व अका यूर्ध्व व सर्व शि
थय १ कमा य १ कनिष्ठ म १ धर रुला पुगुक्क रुक्क रुव त्मूक म म धरी ना ॥ नद्या य वि श सव वा सु ग रु

कथादि कर्तव्यं न तथेव वृत्तं। विवाह रूपांग कटा विधानं रुद्रास्य कार्या अथ योषिका नि॥ जया सूर्यं य
 मत्र लाययाग कार्या नि सिद्धांति हि निर्मितानि नि का सुविद्वद्वधुर्वध्या न विषाग्नि ग मुदि यया नि सि
 दि। अर्चुं प्रम मल्य विवाह याग। योषिकं गानिक कर्म कार्या। स देव दर्शनं पिरु कर्म मूकाना न्ना दि द
 धा कुरु मंगलानि॥ तिथि र्थ यका॥ ॥ वृद्धिः प्रम मल यदा यवला खला य ल की वती त्वथ यगा यन तस्य
 मिश्रा गद्वला प्रम रु नी तिथि नूय कर्मा। सद्धर्मिणी प्रतिपदा दि नथे व नदा॥ क्रमा यगा यन यना जय
 मा भो म्या सुता ४ पश्चि दनी तिथि य। रुलानि ना म्या सु दगा नि ता सां न ह विरि र्म न मूदा दतानि॥ ज्ञाना न रु
 प्रतिपदि योषिक कर्म कुरु वध कर्तव्यं॥ नित्य द्या या मोषध मंगल यागा द्वितीया र्या। या या य कर्म मूकाना

१८

तिथि
 क्रि. ५
 ७ ८
 ८ ९
 १२ १३
 प्रमा
 ७५
 १ २
 २ ३
 १ १०
 ११ १३
 ५

यत्कर्मा चतुर्थी नु॥ मंगल मथ यय यय म्यां कुरु कर्म या हा रु न ना नि। उद्वा हं कुरु गृहं यथा मिश्रा
 र्थ मूयनी मथ रा य म्यां सर्वे धा नृयगा यन मिह क न ना नि॥ स ना यया दि क र्मा यय म्यां मय क र्म यन
 व म्या॥ योषिक मङ्गल यागा य व ग जल क र्म यद ग म्या॥ कुरु क र्म का द र्मा। म हान र्म मंगल य नूदा द र्मा
 ना नू र्मा कुरु मूदा द र्मा यगा। किं प्रम मल्य मथ कुरु वध सो रा ग्य द रु या द र्मा। उ या नि य य रु द र्मा क
 र्मा न ग न य व ग र्मा॥ विदधी न यो र्मा यी य ना दि र्मा य मङ्गली। य रु क्रिये द कार्या पिरु क र्म य य रु द
 र्मा नु॥ तिथि क र्मा॥ ॥ तिथि यय म्मा खलू य रु न र्मा रु द द्वितीयां द ग मी रु दि त्वा। द र्मा र्मा सां वि य मा व नि रु
 सुता मूनी रु न र्मा नि रु हा य॥ मथ रु र्मा व र्मा उ य रु द र्मा द र्मा यन व र्मा या रु क र्मा उ र्मा य द र्मा गुरु क र्मा

सनिदितासिधमशावकदगीद्वितीयाथ यश्चमीसकमीरतीयाथायातयद्वगमीयश्चकुयादगीयोर्नुमा
 सीचा॥नकानूमत्यावितियश्चदग्मोनाविशूदश्चद्वगमीरतीयाथायातयद्वगमीयश्चकुयादगीयोर्नुमा
 जितयश्चदग्मोनाविशूदश्चद्वगमीरतीयाथायातयद्वगमीयश्चकुयादगीयोर्नुमा
 मनुनवाककदलेनवर्जयश्चमातजगत्साहना॥इतिविधिप्रकनर्ण॥ ॥श्चैवाद्यागतामासाश्चकनद्यासि
 थिरिर्गताशसककागवशिश्चनदिननामयकीर्तिताशायेवादिमासाद्विगुणीतस्यमासितिथयपि।प्रकही
 नंमूनिक्कदग्ममश्चदिनद्वयताशीकलिर्नदिनीयेव।कालकर्तुधनकयशजयदतिसमाख्याता।सर्वक
 मरुलप्रकाशाशम्यलिश्चकलहालाके।नानन्दकालकटकशधर्मसुययविजया।दिननामकमारुलीपी

२०

दिनकलरुष्येव नन्दनाकालकर्तुवाधनदारुसर्पश्चविजयाशीदिनादिकशीदिवासाकलिदिवसान
 नन्ददिवसश्चकालकर्तुवाधनदिवसानयदिवसाजयदिवसापीकनामसहगरुली॥शीदिवसविपूला
 शीश्चकलरुश्चकलिवाशनान्दनीदिवसाथाकायजाद्विर्नर्णयशाकालकर्तुदिननामाधनश्चधनवा
 सना॥तथदृश्यमहाकश्चकयजयनर्णयशायमयूकचयुगले।शीदिवसायापुयकद्वगमीयश्चकुयादगीयोर्नुमा
 मूनिक्कदग्मवायकनयानिश्चकलरुष्याता॥३७॥श्चैवाद्योद्विगुणमासागतारुकिथिरिर्गताशसककिश्च
 रुनकागं।शसदिनरुलसुतासंयलिश्चकलहालाकति॥इतिदिनानामानि॥ ॥वववालवकोलवनी
 लाखगवनिश्चविशिर्नर्णयतायस्यविद्वकमलजमिर्नार्थमरुप्रियश्चयमा॥३८॥कश्चवद्वगमीयश्चकुयादगीयोर्नुमा

श्री कृष्णानिगकनिष्ठदुष्टदनागं किं दुष्टमपि यतर्था कलिवृत्तमरुतिमात्राशयतयशाववा कृत्यं बालवको
 लवाखा नता रुवलेतिलनामधर्मागनादिधानं वनिजकृविष्टि त्रिद्या कृनायाः कनका निष्कशा नवद
 जीयागलिनिष्ठहीनं तस्याविरागल कनिर्दितीया दलार्द्धया रुद्रदुर्गं छिनागोः किं दुष्टमाययति यद
 लम् ॥ २४ ॥ वृक्षामिह नामार्थमारुः ॥ १ ॥ कीलागमयति तिष्ठनाथाः ॥ कलुकास्थो स र्वा वायुनरो व
 त्वा नमस्किनागं वदधुः ॥ ववदुसर्वसिद्धिः ॥ दालववाललीलया ॥ कोलवकलहं निर्धं ते तिलप्रिय
 दलनी गननकुरुयं चार्क वनिजवृद्धिवागिर्जा विनिष्टम्य सर्वनागार्थ स क कर्तुं यतस्किर्ता ॥ कर्माद्वन
 उष्टु रुमनल योष्टिकानि धर्मक्रिया द्विजहिताय पिवालवास्था ॥ सीतीति निष्ठकनका निष्ठकोलवस्य ॥ सो

२१

ल्य ४

राग्य संग्रहमहानिर्गति लास्था ॥ कृषिबीजगृहाय यजानि गन्धवनिजध्वः वकर्मवनिग्य तयः ॥ नहि वि
 रिक्तं विदधति यनं यनया तविमादिभू सिद्धि कर्मा ॥ कार्ययोष्टिकमोमध्वानिगकनो मूलानि मला रुध
 रणा काया निवदुष्टादद्विजपिरुनूदिष्य हाक्रानिव ॥ नागलाव नयानूला निवतभासो राग्य कर्म ॥ अतः कि
 नुष्टु गुरु सिद्धि यष्टिक नर्गं मं सिद्धि क्रिया ॥ ववदुसर्वसिद्धिः ॥ दालववाललीलया ॥ सीलावाधुवना
 रुध गदहा मरुमववा वषट्कसा नमयध्व कनका नानुयानयः ॥ योष्टिक क्लि नधु कानिववास्था बालव
 द्विजहिताय पिधर्मा ॥ कोलवय मेद निष्ठविधानं ते तिलपुरुगताय यकामी ॥ गन्धवबीजाय यकर्मजानि
 वनिजपिस्तेय वनि क्रिया ग्यान सिद्धि माया निष्ठकनका विष्टा विमानि घातादिभूतं रु सिद्धि ॥ मरुधो यध

गकनोसवयोश्चिकानि। एतविषनाक विहकर्मयवकादना। सो कान्यदायुधकतिधुतकर्मना।
 किदुघनामिहयोर्योश्चिकममलानि॥॥ ॥ ॥ कतिनयनयकनयनी ॥ ॥ कश्च वरिदलनवाणे दिवायकव
 उर्दनी। वतुकादनीनाणे वरययदनीदिवा। कतिनायदिवादनरुतदिवा॥ सुयवा मूर्यदिनकन
 मूर्यदिवा॥ सुका मूर्यमूर्यमिपूवकाग वातुथनकादनिनाशिनाग॥ कश्च हतीयादगमीयवाणे दिवा
 वसफमयवउर्दनीय॥ ॥ हतीयाववतुथीय दगमकादनीतथा। एतविहिसूखा॥ गमा ॥ विहिसूक
 ववर्जयत॥ सफमयवतथा मूर्यमूर्यमयवउर्दनी। एतविहिसूखाथा ना॥ विहिसूक ववर्जयत॥
 कतुसपिनीरुडा कश्च रुडाचला सुली। सपिनीतुमवयव लहतीयूककयजत॥ ॥ ॥ श्रुतायदि

२२

मूर्य
 उरु
 रुच
 व ७
 मूर्य
 मूर्य
 स मूर्य
 पूव
 पूव ७

५२

कायक वरुमानवउर्दनी। मयवाणे समखाता विहिसूक हयासुतथा मूर्योकार्यविनागाय वरुमा
 नरुयकनी। मयवाणरुनाकाया विहिसूक ववर्जयतना मूर्यववदनं गलसूथेविकादनेसहित
 नियतयतमशानाकी कटि॥ मूर्ययूकलता यतथा विहिसूकेन कटिता मूर्यकाग एमश॥ मूर्यकार्यधुतिक
 वतिमननीवाथगलक धनरुनिव्वकसूथकटि तट वूदिविलय॥ कलिनीहीदल विजयतथ मूर्यवजग
 दू॥ नीनरुडाया मूर्यगिनिरुलं मूर्यमूनय॥ विहिकर्मनलघात॥ सयामयोनकार्यतथ मूर्यकर्मजि
 यूर्यनिदानविहिसूकानयत॥ तीकनडादिकरुवां कवकर्मयुगयत॥ ॥ ॥ हतयूवसिता मूर्यमिनिविमूर्य
 स्वयाम्यादिलसफमीनेमयमूर्ययोरुमासिबूदयवातुथिकवांवायवदगमीनमीवविहिसूदयनकाद
 वानू॥

23

[illegible]

निष्कयाभूतविलयवर्णगणितावृत्तादितयश्च॥ रुचणीकृत्तिकाक्षपा. मद्यामूलविभाषया। शीलिधू
 र्वातयेनानि. अर्धावक्राष्टयकीर्तिता॥ एषकृतगणक. वायीरुमीगृहानिवा। भूतान्वरंविधित्वा. नि
 क्षेपनास्वधर्मेतथागणिर्गणतिष्ठानक. स्वयं विलयवर्णनायाय। अर्धमूलकार्याणि. तानि सर्वाणि कान
 यत्॥ अर्धमूल॥ ३ ॥ शील्यकृत्तिकाक्षपा. नादिष्वध्वध्रवालिनेष्टकृत्तिका. अरिषकृत्तिका. कितनूनगन
 धर्मवीजध्रवावर्ताना॥ नादिषीलहितनूरुवायसी कीर्तयन्निमूनयाध्रवाकृत्तिका. वीजध्वननगवादि
 षयना. नामनाकिमृदिर्गणिनमृत्ता। ध्रववर्मा॥ ॥ मृद्वनस्वमृत्ता. विद्यायै ध्रववानि मिश्राधी
 मृत्तविधिवदुहृषण. मंगलगीतमृत्तहितानि। त्वाङ्गमिदगलिध्रवदेवता. न्यामनकिमूनयामृद्वय

२१

धामिदकार्यनतिरूपजान्त्रा. गीतममूलविधानममृत्ता॥ मृद्ववर्मा॥ ॥ लघूहकाक्षिनीयसा. यच्च
 नतिक्लानरूपमणकलास्रानिलोषधयानमृत्तसिद्धिकनाप्यरिजिदायकं॥ अग्निनीगुर्वरुमर्कदेवर्ग.
 साहजिज्ञध्रवदुष्टयमगीयच्चरूपमणकलालतोषधी. क्लाननिलगमनमृत्तसिद्धिर्द॥ लघूवर्मा॥ ॥
 मूलनिवगजकुङ्गा. धियानितीकृत्तिका. अरिषातमरुधनालवधवधरुदसम्भ्रम॥ मूल
 गजनिवसर्गदेवता. न्यूलन्यथवतीकृत्तिका. रूतयकनिधिमरुसाधनं. रुदवध्ववधकर्मवायुदु॥ गी
 क्ववर्मा॥ ॥ डयानियुर्वरुनजी. धिदिष्यत्तादनगना. ध्रवाया. कानिवधविमदरुमणकुद्यानादिध्रवसि
 द्धेशा. पूर्विकादिनयमकर्ममध्यययकमिदंजगुर्वध्रवा. साधनागविषद्यातवधना. त्वादगलकुदरुना

विष्णुस्मृती ॥ ७५ ॥ ॥ होतुं सविता स्वं मृदूती कुं गद्विमिश्रुलका निरुद्धवाहनयूगं द्विदेवतं मि
श्रकर्मसंज्ञमथमिष्टकर्मसु ॥ सारिधनसमकर्मसाधनं कीर्तितानि सकलानि सवित्रिणि ॥ मृदूती कुं वर्ग ॥
एतत्तु यमादिह्यनिलचयनकर्मविहितानि ॥ वैष्णवययूगं यूनर्ध्वसूमा नूतनलसंज्ञकं स्वयं
दत्तिकाजिकनराकवाहना नामयानविधिषु युगस्य ॥ ७६ ॥ ॥ लघुहस्तान्त्रिणीयूया धरतुका
विष्णुनाशती कुं संज्ञकवत्त्वानि निवर्णकादिमूलका ॥ ७७ ॥ ॥ यमयूगं यूनर्ध्वसूमा नूतनलसंज्ञकं स्वयं
मृगविता नवती वरुण्य ॥ यमयूगं यूनर्ध्वसूमा नूतनलसंज्ञकं स्वयं ॥ ७८ ॥ ॥ कथं कथं यूनर्ध्वसूमा नूतनलसंज्ञकं स्वयं
निरिष्टयनं यूनर्ध्वसूमा नूतनलसंज्ञकं स्वयं ॥ ७९ ॥ ॥ कथं कथं यूनर्ध्वसूमा नूतनलसंज्ञकं स्वयं ॥ ८० ॥ ॥

मिति वृत्तिः॥ सकवर्त्तन कृत्॥ ॥ वक्रि विनिविस्त्रिषु गुणद्वयतामिरुत वाचान्विनतु गनरु कय
गन्धिनामाश नूदाश्चिनामगुणवदगर्तद्विभूर्मदकावधेर्निगन्तिताः कुमसाधतावाभा निस्त्रिगुणन
सन्धियानल गनिविषयगुणतु यध्वसूयकाः विषयेकवदुरुता ध्रुवानि नूदाश्चि वसूदरुता
शरुतगतय कृतसुवा द्वादिगन्धिता नकामाने कुमसाधिव्यादीनां कालकावाप्रमालन ॥ तावाय
मनहा रि म्मासेवर्त्तन रुलया कक्षनीलनेव घटं यटं नगगर्नरुत्तं नगनाखना दीपं नूदनवावयं
घटनयं रुयाननावा निषा नानी नृत्त्य नृपा जहा सुविट नानागानिगा वदामि त्याग्नयादिभूतान द
रुपनमाना नृत्त्य नृपा विषे ॥ न कृत्तु कटका ॥ ॥ उदाहृतमा दध्म रुलमधे का नकामिने ॥ स दध्म

न कञ्ज मूढाह रुतमये सावका मिने ४ सद सहा ॥ दिवस क न स्य माणा ॥ धाधन न्य धवा वा वा ॥ ता
वायमापी ॥ ॥ पुनगमुख सद क था निवृप क नारु ॥ गकठ सम मथे न स्या मोहे ॥ न नु दुर्त्य ॥ मणि गुरु
गन वकारा नि सा लाय मारु ॥ गय न स द ग म न्य द्या य र्थ क नृप ॥ रु सा का व म त म्य मो कि क स म वा
न्य न्य वा लाय म धि र्म ता न ज व लि क रं व लि निरु स र्क पु ला रं य न ॥ कृ द्य क म वि वि क म ज स द न ॥ ग या
स मा नै य नै ॥ वा न्य द कि वि ला स व लि क म ग ॥ ४ ॥ क थ कि व ॥ वि वि क मा रु र्म नृ द न नृ प वृ र्द न ता
न्य द म ला क या रं ॥ य र्थ क नृ प मू न जा नू का नि मि न्य व मा ला दि रु व क नृ प ॥ न क ग रु मि ॥ ॥ १ ॥
त ४ ॥ पु क्ता नृ प न क ४ ॥ १ ॥ य न सा ला क स नि रु श ला हि न ल्प नृ प ॥ १ ॥ ४ ॥ पु क्ता ४ ॥ रु न ४ ॥ नि न ४ ॥ नृ प ४

[illegible]

लरु। गुरु। गुरु। मू। कार्य। मू। वर्क। नी। मा। ४। य। य। ल। न। ४। मू। न। लो। मू। का। ग। र्क। कु। न। रा। ग। वृ। स। रु। व। न। कु। न। सो।
 मू। य। थ। मू। नि। क। स। द्वा। ल। ल। ता। मू। ता। ॥ सं। क। यृ। द्वा। य। ना। न। र्वा। ४। स। यं। वे। द। दि। ल। ल। न। ता। स। य। क। रि। का। दी।
 नि। कु। म। सा। रा। नि। वि। न। य। स। न। ॥ पू। र्वा। दि। कु। म। या। ग। य। ल। कृ। दि। ग। ति। स। स। य। ॥ न। र्क। कु। न। स। यं। यू। कं। वि। द्या। द्या। लि। ति।
 तं। पि। य। कु। न। स। य। स। मू। ख। रु। मू। कृ। द्वा। वि। द्वा। वि। नि। दि। ल। न। कु। न। मू। कं। रु। व। द्वा। य। कृ। द्वा। य। कृ। वि। धू। मि। तं। ॥ वि। वा। रु। द्वा।
 रु। ली। वं। धा। स्य। स। अ। न। रु। क। थ। ग। म। वि। वं। धं। रु। वं। धं। य। कौ। मं। धं। यं। यु। जा। कृ। य। ॥ मू। न। धा। ना। कृ। या। य। वं। वृ। धं।
 धा। दू। दी। वि। न। ४। दं। वा। वा। य। स। यं। वं। धा। च। नि। र्णं। रु। वं। नि। दू। र्ध्वं। वि। ति। ४। रु। कं। वं। धा। यं। नि। र्णं। कृ। प। स। रु। ल। ल। ना। कृ। वं। धं। न।
 स्यं। वं। धं। न। स्यं। न। ग। लि। का। रु। वं। न। ॥ च। द्वा। स्यं। रु। स। ला। का। प्र। सी। म। कु। ना। रि। स। गं। क। मा। कृ। ल। मं। हा। मू। लो। या। ॥ मे।

३०

दो। उ। पु। का। रि। गो। ॥ का। ग। वं। धं। रु। ली। ॥ स्यं। यं। द्वा। द्वा। मं। स्यं। रु। कृ। ति। यं। रु। ली। यं। क। मू। न। मं। तु। गं। धा। मं। रु। वि। यं। रु। न।
 धा। मू। म। मू। न। कृ। मं। वं। रुं। दं। वि। त्वा। द्वा। यं। वि। ला। मं। न। ॥ द्वा। विं। धं। रु। ली। कृ। यं। न। वं। मं। से। दि। का। मू। न। ॥ स्यं। मं। स। मं। यं।
 रु। रु। रु। कृ। यं। मं। रुं। स। द्वा। ॥ स्यं। यं। वि। रु। ना। ४। स्यं। न। कृ। ज। ना। रु। धा। ने। धं। यं। मं। न। जी। वं। ल। ला। यं। वं। धं। ना। ॥ रु। वं।
 लि। य। ॥ रु। कृ। यं। का। यं। विं। रुं। न। स्यं। नं। र्णं। नि। मू। न। ना। च। रु। नं। रुं। मं। रुं। जा। सा। ल। रु। द्वा। न। रु। ली। स्यं। न। ॥ रु। ति। रुं। मं।
 वं। धं। ल। रु। रु। ली। ॥ यं। धं। रुं। ४। यं। धं। ति। यं। कृ। रुं। ४। द्वां। नं। रुं। रुं। यं। वं। क। वं। कृ। मं। रुं। वं। रुं। रुं। ल। ॥ मं। लं। वं।
 यं। कृ। ल। यं। न। ॥ यं। धं। रुं। कृ। यं। यं। रुं। सा। ति। यं। कृं। वं। रुं। यं। धं। ४। द्वां। यं। वं। रुं। धा। का। ॥ नं। रुं। वं। कृं। यं। कृं। लि। नां। ॥ रुं।
 लि। का। नि। वं। का। रुं। दी। क। मा। रुं। क। लि। नां। यं। न। ॥ यं। रुं। रुं। वं। द्वां। नं। यं। यं। रुं। यं। वं। रुं। न। ॥ रुं। कं। नं। रुं। यं।

पापयह निमकन ॥ सवसनाई नाथ ॥ यविनीता विनयाति ॥ तिर्यगुर्दगता यक ॥ द्दवभरवयकाज
खा ॥ श्रीलकाजय नखायी ॥ द्रुहिकादिलिखंदूधशविगाखा द्रुहिकावध ॥ रुनलीने वधयाधनिहा
सय्यायवधं नघाप्रवधया रुथा ॥ गुहागुहयहवधं रुनिवाहविवर्जयता ॥ द्वादि विद्वं महादूर्ध्वं वा क
विद्वकथेवव ॥ दुर्ध्वं नखा ॥ यक ॥ तिर्यगुर्दगता ॥ द्दवभरवकाजया ॥ नवतका ॥ मू ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय
नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय
वेधय रुया निधरु ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय
॥ केधिरुजा यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय

३१

गुनू ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय
विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय
॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय
दुर्ध्वं ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय
वा द्यय ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय
॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय
ला ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय ॥ नाथा ॥ यद्विद्वं गहुका ॥ यद्विनीय

शा ॥ न क्व न पदु कि नर्प यथा स्यात्तु गतं यदेहि नै क्व न निधीति न मूया न दूषि न मूया लुहं स र्वे । अ क
 द्या यै र् स यू ता क ४ यु का या । ल म्बी र्ज सा ना कृ ज क्क ण ना ग ४ क ह त्का र्था पी ति न द ह ना ग ४ क ण ४ ला न सा
 कृ न म्मा त्म ज वा ॥ न वि न वि मू त रा ग मा ग तं कि ति मू त रु द न य कृ दू षि तं । य ह ण ग क म थ ल्क या ह तं
 नि य त मू धा क न पी ति न क य त् ॥ रा र्वा य था र् स र व मू रु य ण । या ता य हा र्वा य दि वा न ग ४ क ४ । य द कि पी त
 कृ रु दं नृ पा णी । या म्भ न या ता न लु रु ४ ग ४ क ४ ॥ म दू दू ह त मि ति य व क न । य कृ ति वि ध र्थ य या त म व वा ॥
 नि ग दि त य ति व र्ज दा ष कृ त्ति न वि ध र्थ य र्ग स मृ द्ध य ॥ ॥ नि र्ग म दू षि त न क य रु ली ॥ ॥ य म्मा ४ ग ४ नी
 स फ स ला क रि न ४ कृ न ण सो म्भ न य वा वि वा ह । न क्कां लु क ने व दु वा द मा ना । म्भ न न र्म मि दि न र्शे ४ य या

३२

ति ॥ वि वि ध या मि र् स या मि । स र्ग वि ध नि ग क वा । रो म ने वा कृ ना ना ग ४ स क सृ ता वू ध न दु । य वृ मि
 ता स न क न । दू र्ग म रू रु ण वि र्वा । का क र्वा ष क्क ज ने व । ना कृ ना य य ति मू ता ॥ य म्मा ४ ग ४ नी त नू वि र्धि द ४
 या य स फ स ला क या । वि वा ह म न क या । कृ ने व न क वा स या ॥ ॥ नि र्ग म दू षि त न क य रु ली ॥ ॥ ला न द नि डी व दू
 दू ४ ख या म । व ध मू र्वा यू ति र्ग य ली वा । या मि कृ दा ष च न य ल्य ता व । या नि य द य च म हा कृ दा वा ४
 र्ग य पा नि य द दा वा ४ । व र्ज नी या ४ य य म्भ त ४ वे ध र्थ कृ ल ता मू लू । या नि ड म न य ल्य ता ४ ॥ ॥ नि र्ग म दू षि त न क य रु ली
 म ४ ॥ ॥ स र्ग हा स च म धि कृ र्ग य वि दू मू खा दि न । मू ल वा कृ म रू खा कं । स नि पा र्ग य दू र्द । कृ दू न
 द्वा द म्भ या कं । उ ल्का हा द क वि ग तो । द्वा वि ग रू र्मि क म्भ । य या वि ग य व क कं । नि र्ग म दू षि त न क य रु ली

उक्ता होवउयग्रहाः सस्मनविद्यदाकाः सर्वकार्यसर्वदा ॥ यशदिव्यकिताकृत्या, कता
 यशश्चर्मयूनशतविद्युत्स्वामास, यनिहयमूयग्रहाः उवमूलाहमरुत्या, दलानिभययदुर्द
 ला मूलादगताकतुर्विंशत्येकाविधानकशादाविंशवजनामावश्याविंशवकममशयदुर्वि
 लतथाच्यत्र, रुचमूलसकीर्तनश ॥ इति उग्रग्रहाः ॥ ॥ सूर्याधिकितरादुज्ज्वलितरुत्वाहुषमेत
 धरतो योऽवक्रमसाधिरा मलनया नीतां लुना संयुता ॥ धिक्तावतितेयनस्य विमथं वधुीन
 वधुयुधं तस्मिन्नासहितं कुरुनिर्जदितं कार्यं न कार्यवृत्ते ॥ ॥ यस्मिन् नृककिताकानूतस्यात्या
 गानूनाधया ॥ अष्टवेवयूनशस्य दलमवद्वितीयक ॥ यश्चमयततासक, सूर्यपार्तनियाजयत ॥ स

३३

यस्मिन् कालिरुदेवरागलुर्लगाविधीयता ॥ तस्मात्सकमकजक, लाटानामविनिर्दिष्टता ॥ तच्चतुर्थकर्व
 ऋयं मष्टयाद्यातमूयताविकारुपुपूनमष्ट, दलमवेधुतिरुवता ॥ सूर्याभिव्यादिगलयत्, सूर्यसर्क
 यथाक्रमे ॥ ॥ दिनकनयूताहा, दलमामयविहुरुत्वा, विकारुपु, रुचतिनलुरुमिग, एतजक
 मादथनवती ॥ याद्याटलाटाद्यटिकावतपुः सर्वायनिर्दुखववेधुतीयाविकारुगलापिमूदुर्लमक
 वेदादिकपातुविधिर्विचिह् ॥ यामनयतितावका, यातनयतिताहविशयातनयतिता नूद, किपूनमान
 बाजना ॥ ॥ यस्मिन् नृककितासूर्य, सूर्यास्यतनियाजयत् ॥ मूलमादिद्वयापश्च, वलाभा मष्टमष्टसू ॥
 मूलमादिविज्ञानि, मेरुप्रवणवती ॥ क्रमसाष्टवृतीगलु, लाटानामध्वरुत्वायाद्याटमथविकारुपा

गंयसूटकीरितीरुयाधियादिगजवरु सूर्यमर्षोद्यथाक्रमे ॥ आद्यातलारुति॥ पातनपतिरुति
 ॥ रूतिनविद्यातश ॥ विग्रहसमरुक्तिनप्रवलनस्यासकमसूर्यरुक् ॥ लक्ष्मसमरुगनिचदग
 मकदुसुधादग ॥ यलुश्चरुदगवदुर्दग ॥ रुखाकानिघातावधे ॥ उल्काकालविद्यागमनगदिता
 वेकालविंणर्करुक् ॥ माहनिर्घातरुक्मय ॥ वजानियविषयकाशवकविंणतिमाहका ॥ कमलेकारु
 नामता ॥ अन्धायवहा ॥ नखाययिगुलायतिर्यग्यामरुतिनी ॥ एककाकालगमसु ॥ हानुराग्रध
 मधुतश ॥ अंधययुरुधमृत् ॥ यदुर्ककालगगुरु ॥ द्वादशमधुमा ॥ वाका ॥ नवका ॥ रुक्मका ॥ नका ॥ रू
 द्वादशीयचरुनी ॥ अन्धायतथादिरी ॥ वज्रयत्सर्वकार्य ॥ कालवृषनर्तनयश ॥ गूलवर्क ॥ ॥ वामर्ष

३४

गुरुवला रुदकिलरुनिभवयामधुगूलरुवमृत् ॥ ग्या ॥ गूलरुवावहा ॥ १ १२ १२ १८ अगुरु ॥
 रुक्मय ॥ सफमर्करुवतिसविरुहायचमविग्रुका ॥ गूलत्येवा ॥ रीखगनिनितिदलमकदुवसा
 दगदुदधुविग्रससंखसनवदगमितनमृकायदिष्टा ॥ विग्रद्वि ॥ सफसंखमृनिहिनरुदितश
 उनिर्घातयातश ॥ रुदकविंणतिनमात्कथितसुमाहनिर्घातकम्यकलिग ॥ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०
 गुरुस्वल्कर्मकार्य ॥ सिद्धिपुयातिदरुनायुविद्यादिसाध ॥ अन्धायवहा ॥ ॥ दुर्दविगुलाययमादुर्न
 या ॥ सिद्धिमनायविनलासलखा ॥ कालमृका ॥ लभूतयेवसखा ॥ मधुविगुलाययवाकर्करुनि ॥ अंधयय
 रुवमृत् ॥ यदुर्ककालगगुरु ॥ द्वादशमधुमा ॥ वाका ॥ नवका ॥ रुक्मका ॥ नका ॥ रू ॥ निगूलवर्क ॥ ॥ वडास

पद्मनाभिरादिनकनयताधनेऽकन्यकाशोभेनयमदाययातिमननसोयलवेष्मसूकजीवऽणुक
 गणाङ्गजीगुरुकनाऽकाविद्वदक्रिकमात्. रुह्याक्षितदीक्षितारुहवननित्येषवासाविना॥ यानिष्टुन
 विष्णुकुञ्जमननसोभननस्यऽयजा. दोरुर्गर्भगुनूपसिक्तनसहितेऽथद्वयसायलकै। प्रवृक्षाकै
 सतनसद्वृजगुनोवाकुकिकविद्वरु. द्याद्यैर्मृत्पूजसद्वृहऽणुरयूनदीकायवासाविवा॥ रुक्मनीयव
 लीकृत्वा. रुक्मकायवलीतथा। रुक्मस्यादुवलाधिक. कृत्तिथीधनसम्पत्ती॥ यापयुरुलस्यकृ८. पाप
 यानिष्टुगसुधायापद्वयाम्भगनऽणुरयिनसु८गणी॥ यापासकमगऽगनीयदिरुवत्याय
 नयूकाथवा. यत्ननापिविवर्जयन्मृनिमतादायाययंकथम। यापायीविषदाष्टरुमननलीकोन

३७

यनागमरुवा. वेधयैविवरुवृत्तिमननलीयैसऽसगूलाभनाशयैसवलीगृहकनली. यानिष्टुहर्षन
 क्षापनयनऽयवत्यासकमनालो. नविनविजकृजादिरिर्नरी॥ यापाविवाहादिगुरुक्रियासूक्तन
 यहादसगनऽगणाक्षवलेर्षिहीनमुवकृष्टकारकनातिनान्नविनान्नवाली॥ कृत्तियामिहायाग
 शा॥ स्वावेस्वमिहुरुवनसूददीक्षितावा. रुक्मस्ययूषविमलीकृतदिष्टुखावा। यानिष्टुदासमद्वय
 सुर्ककनाति. सामऽसमीहितरुलखलूमानवानी॥ यूर्ध्वुष्टिकापुरुवनरुवननित्यैवा. सोभ्याच्च नि
 ष्टुहृदगधनदीक्षितावा। यानिष्टुवधविहितानपद्वयदायान्. दायाकनऽसूखमनकविधंविधरु
 ॥ मिहायममिहसमीक्षितावा. मिहालकमिहसमाप्तितावा। कूनयहादसमितापिसामऽसमीहिता

ध्वजित नन नाणी ॥ अनिष्टा लन संकायि पुनः कुरुत दशगणी ॥ सोम्य हा गवि मित्र वा वलि ना वनि
 नी कित ॥ यामि नु का व रं ग ॥ ॥ या पा क क नि ज ना थ या य स प र्क ग वि वा ॥ गुरु क र्म गु र स नी नि
 व क र्मा ल क र्म ना स क न वा ग सि नि क न द य म थ ग वि ल ग न वा ॥ गुरु क र्मा लि गु र क र्म ने वा य दि ल
 न न द्या नी ॥ व द्या य र द ल पा य या पा ल क र द ल ग नी ॥ यामि नु या ग ग ति ना स र्व क र्म सु ग र्ति त
 न क र्मा यामि नु या ग ॥ ॥ क म सा स व ति या म ॥ वि क र्म क र्म नि नू य नि वा यू मा ना सो रा म्भ ग
 रु ना र्था व ति ग लु ॥ थ मू क र्मा या धृ ति मू ल ग लु दृ दि ॥ क र व ना ना ना रु व क र्मा य वा या या त र्द र्भ
 ल व थ व रु लु दि श ती या ता श त द नू व नि या नू य नि द श नि व सि दि सा थ मू र्म लु का ॥ व र्म द्या व र्म

३३

ति वि ति ना म स मा न रू ल द य म वि नू द रं क र्म क र्म व या गा क र्मा म नि द र्म ल या द म्मा य श स व
 धृ ति पु य ति या त ना मा स र्वो य नि द र्म नि द य म्मा द र्म ति पु य या ग ल य म्म व व क र्मा या ना न रं क र्म न व
 य र्म मू ल ग लु ति ग लु य स र्म व ना श मू र्म क र्मा म्भ वि व र्ज नी या ॥ ॥ वि क र्म क र्म टि का मि प र
 ल य र्म क र्म की र्ति ता श ग लु ति ग लु या ॥ स क न व या या न व क र्मा थ नि द र्म द श ती या न व र्म तो स क र्म दि
 ना म्मा य र्म क र्मा म्भ क र्म नि द र्म म गी र्म क र्म न य थ ॥ ॥ स प ति व र्म ति दि ति वि क र्म क र्म सो म्मा ना व र्म ना मि
 न पि वि द र्म नी ति दि द र्म ल य न य द र्म नी तो क र्म न मे र्म नृ य द र्म न म य द पि द र्म सो म्मा म्मा म्मा य र्म
 रु म ना द पि व र्म सो म्मा या श द र्म को र्म ल रु न म पि म्मा रु न क र्मा ॥ म्मा ति ग लु क र्मा य य न वि न व

[illegible]

ध्यातविषादिकश्च॥ यद्यस्य स्वदमस्तीति तत्कवीतानि वयागासिद्धि सर्वेषामपि आनन्दानां रुचि
 रसिद्धिशास्त्राभ्युपगम्यति आनन्दनिमित्तमपि यत्कर्म गुरुकर्म न्यसि
 लान् विदधीत तथा गुरुसिद्धिं गुरुकीर्तिकर्तव्यं यत्तद्यद्यनस्य मनुकवीता धर्मवृत्तिकर्म्या गुरु
 हानिना न्यायिकर्माणि वेद नृपादिभूता नृपाय कन्यानि सप्तकानि विभक्तस्य वनवेधुनियोगसि
 द्धिगुरुस्य कर्मधा सिद्धिं पून निरुपेया वस्तुवद्वयविकर्षणं ॥ वेधुनिश्रुतिघातो यो कानि सा
 ध्याय लक्षितो स कर्मवर्तिनो तद् यत्तन्मन्त्रं नृपशक्तिस्तदादिभूतस्यैव गता रुचि निरुल्लसत् ॥
 नाडीभूता सततं यत्तन्मन्त्रं आगच्छ विषमस्यैव का स एव रुचि ॥ या गच्छ कन्या ॥ स मया मवि

गतिश्च दलं कृत्वा मिनी पूर्वमकं मूर्द्धी विना ॥ आद्या तत्पुत्रपनिघद्यतिघातपूर्व गणुतिग
 पुकलिसमस्तवधृतम्रा आदिस्यवदुपिह सूर्य रुदप्रमूल मेरा स्थानिच सूनवर्द्धकिरानिमूर्द्धि ॥
 उका मूर्द्धिगता सुयादगता तथा सि र्वा मता सुयय अदखायक मिदं यूर्ये नरि हितं खा र्हा लिका गतु
 आद्या तादिषु मूर्द्धि र्निगदिनं तर्क कलखा सुयाः सूर्या चतु मसा मिथ निगदिता दृका तन कार्म
 लः ॥ दिनक नदिम नर सा दृष्टि स्यात्तज्जमा रुवति चिह्न त मूर्द्धि का विमोडा म नू च ॥ पतति कुः
 वल मध्य मंगला ना विनष्टा कल न कयिल दृष्टा निर्द्धर न्या ज गति ॥ ॥
 मूला मूर्द्धि मूला मया सूर्य निघ म्पि गता त ना वैधती आद्या तत्पुनर्वसो निगदिता पूष्य ववज स्यात्ता मू

३८

लगनुम म्पि न प्रथम कामि कुति गनु सथा सा र्थ्य वद्यतिघात मिदं तय ना दृका तन कार्म लः ॥
 उक पु र्वा द्वितीया मिं हतीया दिव दुर्धुवर्षा विद्य स्य र्क यत्त ४ या द ४ या द रु स्य दूया गि ४ ॥ उक द्वि
 हव दु ४ या द ४ सूर्य न क ज गे ४ क मा ता रिद्य क व द न क र या दानिय तिला म त ४ य स द ति ह त या
 य स्य द सु वि व र्ज य त् ॥ म म मुरु द ४ या द ४ सूर्य कर्म सूर्य द ४ ॥ सूर्य कार्म ल या द व व र्ज ॥ ॥
 मूला म्पि क न खा च रु या द ग विघा टिता मूला विंशति न खा रि ४ खा र्हा ना वध ड द्यत ॥ मूला धिका
 विंशति न व न खा खा र्हा न विद्ध मूय न व ना नी मूला म्पि व क रु न स्या ना र्हा यत्ता च दु ४ उ द्वि मूला या द
 दति ॥ मूला विंशति न खा यु ना जी या ना ॥ ॥ यत्ति म्पि द ग रु सि ह कू रा वा य दि वा गुरु रा य या

द० पी० शत० ल० बा० ॥ पादायुः पुरु ल० क० ॥ पाद० रा० ग० ॥ ॥ न० का० क० क० य० य० य० ति० य० क० व० य० द०
 ग० ॥ अ० ल० मा० पूर्व० क० दि० क० ॥ द० ल० या० ग० ॥ अ० ल० य० ॥ ॥ अ० ल० या० य० ती० यो० ता० म० द० या० य० वि० य० स० त० ॥
 वि० श० या० वे० भ० ति० वि० या० त० मू० ला० या० कु० ल० क० क० ॥ हि० मू० र्व० वि० य० द० व० दु० ॥ अ० मू० र्व० व० य० द० व० त० ॥ न० व० र्व० ॥ अ० ल०
 मि० त्या० क० ॥ ख० ल० व० क० य० म० न० दु० ॥ क० रि० का० या० क० अ० ल० द० ॥ सो० म० य० व० क० मू० द० द० त० ॥ य० द० क० या० ॥ स० मा० या० ग०
 ॥ द० ल० या० ग० ॥ य० की० रि० ता० ॥ ॥ दु० क० ग० दि० मू० ग० य० क० ॥ य० ती० या० ता० दि० वा० नू० ल० ॥ य० वि० य० ॥ पि० ह० दे० व० य० ॥ वा०
 क० वे० भ० ति० व० व० ॥ मू० ला० या० ह० र्व० ल० स० य० ॥ द० या० ता० वि० य० द० व० त० ॥ सा० म० य० व० व० क० व० व० य० ॥ क० मू० ला० रि०
 वी० य० त० ॥ वि० क० क० रि० स० न० य० म० ॥ व० क० ग० ल० ग० ति० ग० ल० को० ॥ सो० म० य० व० क० मि० ति० क० य० ॥ द० ल० या० ग० ॥ य० की० रि० ता०

३२

॥ अ० श्रि० या० दि० न० व० य० ॥ स० वि० ता० य० य० य० मू० र्व० क० त० य० ॥ स० र्व० ल० य० क० क० त० ह० दि० क० व० ति० थि० र्व० ॥ न० वि० ल० न०
 स्वा० ॥ क० म० र्थ० द० ल० या० ग० क० य० क० धि० ता० य० ॥ स० र्व० ल० य० मि० दू० व० ॥ वे० ध० श० य० क० ता० य० या० ति० म० न० ल० या० या० ति० दू० स्वा० नि०
 वा० ॥ अ० ल० य० क० व० क० म० त० वा० द० ल० नू० द० य० क० ॥ य० ल० य० क० ना० ग० लि० नि० नी० ॥ पु० न० वे० क० स्वा० नि० ॥ पु० न० क० म० क० य० त० ज० क०
 स० म० चि० त० क० ॥ स० ग० य० द० य० मू० र्व० रि० द० ल० या० ग० य० क० ॥ ना० ॥ अ० त० य० न० ग० क० य० ॥ न० क० वि० न० व० नि० क्रि० या० ना० द० द०
 क० न० क० न० व० ॥ पु० व० ल० न० व० यो० दि० क० ॥ द० ल० या० ग० ॥ ॥ अ० श्रि० या० दो० ल० नी० य० क० ॥ त० ग० यो० य० ॥ स० क० न० श० अ० य०
 पु० र्व० य० क० य० पु० र्व० ॥ त० य० क० न० दू० ल० ध० न० ॥ अ० ति० द० ल० या० ग० य० क० ॥ ॥ न० वि० ल० नि० क० न० व० य० पु० न० र्व० पु० न० य० ॥ क०
 यि० ता० क० म० ल० वा० न० दु० ग० ॥ श० क० व० क० न० क० ना० क० ॥ स० व० स० न० मा० स० हा० न० ॥ ॥ त० क० की० ल० न० दू० क० य० मा० ना० ॥ य० पा०

[illegible]

वीनवदित ॥ यूयहावाकृकत्वाकर्षजीवरुमिसुतामताश्रीयहोमितनीताहुलोविशेन्यनयसको
॥ यूय ॥ ॥ नविहृयकजावाकृगनिशामावृक्षयुनृशयुर्वादिप्रवियाकृतकार्याणीमार्गप्रवकाशादि
कति ॥ ॥ हानृशुकृकमायुशृशैदिकयशनिशनीलोम्यसुदगमकीवषायादिदिगधीमृवाश
दिकति ॥ ॥ नजाकिमकासवयानसवालावक्रिमकीमवमकुकर्मासूवचुताओर्ध्वकवर्मका
कर्मयामयव्यादिनवीविदध्यातागंखाकृमूकानृजतहृशकृहीवृकृकृयवृविहृमजाश्रीतक
उकीनविकावमृनिपूष्यामृवानमृजनिन्द्वाना॥ रुदावृमृयविवाविगकुवम्विविदिघाताहवसा
धदकाशानानिवगाकनकाउरुमयवालकार्यानिक्कयकृयार्ता॥ नेयूययूयययर्मकलायनि

त्यादि सवालिलिखनानि। कुरु क्रियाकात्र नयु क्रियानि। याया मवादायवृद्धविधया॥४॥ धर्म क्रिया
 योदिक मय क्रु विद्या माह ल्यह माह नवः मया जा नथाय रुष क्र विरुष मादि। कार्य विदया स्तु न म क्रि
 क्रि। श्री गीत ग्या म विन न गध वधा स वाल क न ल दिक मी र प प र ग का ग क्रि वि क्रिया य सिद्ध नि
 पु क ह्य दिन स म सा शा ला हा म सी स रु य ग रु दा स पा या नृ ग क न वि सा स वा यी गृ ह पु व ग दि य व न
 दी का णि न य क मी क स र त क्रि क र्मा त ॥ ॥ न वि वि न ४ ली ग क न य न य म ही रु रु र ग नि ज य मि ४
 । ल घू ४ म न क र रु पु ज नृ दू य ल नि य नी क ४ क धि ग म नी रु ४ ॥ ॥ स म पु क रु नृ सो म वा स वा ४ स र्व क
 म स र्व क वि सि दि दा श रा नृ लो म ल नि वा ग न य रु पु क म व स ल क म सि द्धा ति। गु नृ पु क वृ ध नृ ना वा

नामार्थसाधकाभविस्वर्यजरोमानोपुरुकर्मस्वयमपि॥ ॥ गङ्गाहिलाकानसन्नजनका
माङ्गिककोसुदिकवागयात्रामहीसुतकाधनरुषणमपतनसुनरुखलूलोदकल्य॥ नमिथि
नवनकरनगहनवयलुमावानदोर्जनकधीतवनादववनयथा॥ नवानदासाधुवकिना
होविगमताहोमलनेयवाकशाग्रधंसमालाकविलासिनीनाकदाकवाणवनिरुलास्यशावान
गुहास्थापययावरुस्यकार्ययथादिहसुगमिनिदिहवदुदवापुवययुदस्ययुगलनानिर्मितम
यताम्॥ **स्मृतिवाचकवर्ण**॥ ॥ धूर्वाक्षसुहागदिवसाधिनाथसुधेववाकदिवसस्यविद्यानाम
शुहाधमयनिवर्तनसुजकिवानानिनिपद्यमनापुरुहावासमायातासामकुरुनरुकार्मवा

82

आदिखवानंतिनिनायूगं. सोमदुषकं वृषभनृमीनीगुजोमृनिगुजप्रतिगम्येकं. दिनदिनक्रास्य
 दुमहानी॥दिनकालहाना॥ ॥नसद्यदयकमूनयग्ननिखिगनिनाहमश्रयामाह्वासूर्यादीनांय
 र्कनाजोयत्नातुलुहानेरु॥नाशिकालहाना॥ ॥मन्वर्कदिवस्त्वद्वदयके. नकांमूकुरुं कलिकावद
 किादिवाकनेकेनययामिनीमू. नगर्हिताः सद्यसूर्यभरुनमू॥कलिकवला॥ ॥नववर्कवदुपश्र.
 सोमसकद्वयकथा॥कजमहद्वयकेव. वृषभश्रुतीयकः जीवसफाहमकेव. हवत्तानीवहानव
 गनावाद्यकमश्रु. कालवलाविवर्जयत्॥दिनवायवलाकालहाना॥ ॥सूर्यवदमतोनीनीनग
 रुमनवाकिनीरुमिज्जवानागेगलिज्जमथागुनूदिनदकावलीमू. रिता. मू. म्बनिर्मविज्जमसाहम

मिनः श्री नाम देवादिनां यामिन्याः सकला क्रिया समिप्यन्ते यानां कालादयो ॥ नाहि वा न वला काल
हाना ॥ ॥ वदाने मूलैः लभन्ते नयनं न संयत्तं न कस्य कामवानं वा लोका नादि वदं वसूनि निखिनः
यावका वदयको ॥ यत्पुनिकं दिनमात्रं सति ह मरं मरु वलुः वनाको पूर्ववे वाईया मं कुलिकमि
ह वरं मधुमं वा एकार्त्त ॥ दिननि निवा न वला का न हाना कुलिक वला ॥ ॥ वा न ए वृत्ति मून या वद
कि सूर्या दया दा वल मा ऊ धा मी ॥ दुर्द्ध नथा धा य प न व पु न्या च वाई दना क न ना हि कारि ॥ च वाई द
न क न या र्विया ल या ल म ध या नी य व ले य स म्य क ॥ सूर्या दया दूर्द्ध मूल ध न धा वा न ए वृत्ति मून या
वद कि ॥ सो म्य ल म ल स वि ह न द या सूर्य म व य वृत्ति वा न म्य क म्य न द ल प ले ई कि र म धा मू ली द

॥ तद्वदन्नाम ननु यथ न वदतः सन्मन्त्राः स्यान्मूर्धक कुरु नि यतं यन्मिमांसा मधकात् ॥ वान
पवर्हि ॥ ॥ अजमृतिद्युतमर्कुराममर्कुरायां वृषरुधनूकलीनाम् अर्कुराजोडलायी मकजनि
थूनसिंहकन्यका रूपरुत दगदितमिहवनाका वानवर्हि रुवकि ॥ मीनालिममकलसमृदिना
कमार्जः ॥ कीटका मूर्कधटभूतथाडनार्जः ॥ अन्यमृमानिभूतयेवममकनार्जः वानपवर्हि मिहय
मूनया च्छेदकि ॥ अन्यमतवानपवर्हि ॥ ॥ अयनविभूवद्वयवतपुःषुत्तनीतयः ॥ वतपाविभू
पयभ्यः स्रकात्तादादगस्तताः ॥ मृगककटस्रकाकोडलनादाकिणयलो ॥ विभूवद्वयुलाभयो ॥
लमभ्यस्ततायनाः ॥ धनूर्मीननृयूकन्या ॥ षुत्तनीतिर्विधीयत ॥ वृषवृषिकर्कुरुषू सिंहविभूयदी

स्मृताः ॥ इति यदस्ति नरुन विसंक्रमादिन नूरु मठगीति मूर्खरुवतुडदगयागयलमृग
 कार्कि (जः) क्रियतु लाधनया विम्वरु स्मृताः ॥ सजाति संक्रमा ॥ इति यययल पूर्वमतीत वा रुनाय
 ला मठगीति मूर्खतीत वृत्तव विम्वरु द्यय ॥ याम्यायुल विम्वरु पदमथयो दानाशन न विम्वरु यम
 वदन्तीतीत मठगीति वक्रु मरु र्भय ॥ खल्लयल य सोम्या ॥ कर्कट विगति ॥ पूर्वमकन विम्वरु ॥ यन
 वरुमानं तु लामभ नाश्रुय गो दगा ॥ मठगीति लामती नायी मठि वक्रा यु नाठिका ॥ पूष्णरुया स्या
 दिम्वरुयी ॥ पूर्वमक मठगीति नाठिका ॥ पूष्णकाल यवर्षा ॥ सजाति ॥ सजाति म्वरु सर्वा सु पूष्णक
 लनिक यता ॥ नानदान जयादीनी कर्षता मरु यं रुली ॥ नरु कर्कटका रुया दक्षिण यन संक्रम ॥ पूर्व

४४

येति पत्रम्

निविद्या वसुवना म् ॥ इति रुली ॥ यादृश नदिम नमि मालिना संक्रमा रुवति तिग्म या विषया ता
 दृगीरुल मवायुयान नश साध साध विवला नगीत गग ॥ रुली ॥ मृतजम नि संक्रायां यरुल यदुस
 र्थया ॥ मृस्य म् सार्जन येव न साया दृक्क वानिजा ॥ यूर्गदू म् म् यदि नमक यला होमा विनया वधन

[illegible][illegible]

[illegible]

व. कर्त्तृकायादमवयव। नदं गानकं कर्त्तुं भवना निर्विधीयत ॥ ॥ कर्त्तृकायादुयपादा नादि जीम
गकाईकं। नदं कृत्य कर्त्तुं दृषना निर्विधीयत। नृगनिनाईमादाय। उयपादायूनर्चस। नदव
धस्य कर्त्तुं मिथूनना निर्विधीयत ॥ पूनर्चसाथपादकं यथा। लवसमचिर्न। नदवयवमसः कर्त्तुं क
र्त्तृना निर्विधीयत ॥ ॥ माद्याय पूर्व रुन्ध्या। डरुनायादमवयव। नदादित्य कर्त्तुं सिंहना निर्वि
धीयत ॥ ॥ डरुनायादुयपादा। रुक्विनाईमवयव। नद्वयस्य कर्त्तुं कन्याना निर्विधीयत ॥
विनाईभूतथास्वति विनाखायापकयय। नदकृत्य कर्त्तुं दुलाना निर्विधीयत ॥ ॥ विनाखायाद
नकतु। नूननाध। केशमवयव। नदं गानकं कर्त्तुं विद्वाना निर्विधीयत ॥ ॥ नलक्षपूर्वाघाराय। ड

रुनायादसवराऽतस्तुनगुनाऽकर्तुः प्रवृत्ता निर्विधीयता ॥ ॥ इरुनायास्तुययदाऽवयवधनिष्ठ
 र्जकेऽतस्तुनेऽथनकाऽमकनावालिडयता ॥ ॥ धनिष्ठाऽर्जगतरिषा पूर्वरुदयकययऽतस्तुने
 थनकाऽकर्तुः प्रवृत्ता निर्विधीयता ॥ ॥ पूर्वरुदययादेकऽइरुनाभवती तथाऽतस्तुनगुनाऽकर्तुः
 मीनवालिर्विधीयता ॥ ॥ १२ ॥ ॥ इति वक्तुनामि ॥ ॥ मवालिरोमं वृषतो लिङ्गकं काममूवत्या वृषकं
 कर्तुं द्वा सिद्धं वसुधाधनमीनजीवा दशधियस्या मृगकर्मलो विष्णो मषवृश्चिकया रौमऽगुडा
 वृषदुलारुता वृषकं न्यामिधूनयाऽयाका कर्कस्य वदुमाऽया मीनधनिनाजी वऽगनिर्मकवर्क
 याऽर्हिदस्याधिपतिस्तुर्थऽकथितं गणका रुमेशऽइति ग्रहार्णव कुरु ॥ ॥ यद्दुधस्य गृहं स्याच्च ना

४८

हास्तुहमूयता यद्दुधस्य गृहं नादा रुद्वं कुरुत वृषेऽका कथावाक्यं रुद्वं मिथूनस्तु
 तऽवाक्यं नीवधनवृषादिकगनिवदस्य वा वाक्ययास्तु तऽकर्तुः र्थनालो रुवदयो तस्मात्सफ
 मगऽकर्तुऽवाक्यया गृहं वाक्यं ॥ ॥ केऽकर्तुऽवाक्यं ॥ ॥ मवावृषा मृगऽकथा ककिमीना वनिष्ठा मातास्तु
 यादिदुंगविष्णुयं सगस्तु फमनी वगऽर्हि गङ्गागदिगनामा स्तुष्टा विगङ्गकनदवशपञ्चरिद्य
 मास्ता ता विगतिऽयनमाऽकाऽमृजवृषरु मृगमना कलीना मषवनिजा यदिवाकनादिदुंगऽ
 दगलिखिमनूयुकिथीद्वियाऽले विनवकविगतिरिष्यतस्तनी वाशा मषं न विवृषवदु मकनव
 मदीस्तु तऽकथायां वाहिनीयुता गुनऽकर्तुऽमषरुगुणानिऽनुनाया मूवथ मिथूनसौदिका स्तु

नष्टं दृष्ट्वा सुकमनीयाः ॥ नारलो वायदिवांगका ॥ दगंगको ॥ गनीत्युं ॥ सोमाष्टाविंशमेतका ॥ वृष ॥
 पक्षदगंगव पक्षमंग वृहस्पतिशसकर्विगममकं ॥ विगल्युं ॥ गनेम्यनशयेनिकययविगंग
 पनमाज्ञानिगयना ॥ **ब्रतिपनमाज्ञनीवा ॥** ॥ सिंहवृषाथममय कथाधनीडला दृष्टादिका ॥ गल्य
 कीमूर्याना ॥ माख्यातानामय ॥ पिय ॥ सिंहवृषाजयमदा ॥ कामकहलोलिकं रुधना ॥ सूर्यादीनीमू
 ल ॥ त्रिकालरुवला न्यनूकमत ॥ सिंहजनीलिकलसागिष्वदिगंग ॥ सूर्यावलयकविमन्युना
 त्रिकाली ॥ तुंगमकादुपनगारिहितावृधना ॥ दिगंगका ॥ मूनिहिर्वजितावृषाथ ॥ दृष्टात्रीवसक
 ममकीदीनी ॥ त्रिकालरुवनानि ॥ सिंहवृषाजयमदा ॥ कामकहलोलिकं रुधना ॥ **ब्रतिमूलतिका**

४८

ली ॥ ॥ विगतित्रैल ॥ सिंह त्रिकालमयनस्वरुवनमर्कस्य ॥ डचैरुगचितय ॥ वृषाथनस्यात्रिका
 लमयनस्वरुवैडुलीमस्या ॥ डचरुलंकथाया ॥ वृधस्या ॥ तुंगमीक ॥ सदाविहीयनतत्रिका ॥ जार्ग ॥ य
 चरीनैलो ॥ स्वनागिजयनत ॥ दगारिहो ॥ गजीव ॥ त्रिकालरुलैस्वरुपनवाय ॥ तुकस्यडुलतिथय
 त्रिकालमयनस्वनागिज्या ॥ कीरुत्रिकालनिर्हेजे ॥ ववियेस्यनवयथा ॥ सिंह ॥ मूलत्रिकालसावाव
 ल्या ॥ ॥ सूर्याजीवकुजदवावृधनविजीवदू ॥ सूर्या ॥ कवि ॥ स्वध्रुमीमनवीदव ॥ गनिदू ॥ जोमिश
 लिष्टुकदूजी ॥ सोम्य ॥ तुकमहीजमन्युनव ॥ तुका ॥ की ॥ पूरीसमा ॥ जीवानक ॥ सूता ॥ गनि ॥ क ॥ गु ॥ नू ॥ जी
 वस्तद्वनय ॥ मिहालि ॥ सूर्या ॥ कुनि ॥ रोमीवा ॥ सूर्या ॥ दूजी ॥ सूर्या ॥ मगा ॥ दूजी ॥ वा ॥ आदि ॥ लु ॥ जी ॥ नवि

यन्त्रिकि (गणानयन्यन्त्रिकि वगृह्य) सद्यस्यन्त्रिकि सदा गृह्यन्त्रिकि वृद्धि तदर्थं। विदग्गलिका वदुनय सफमगमद
 मनेवा। पूरुम्यन्त्रिकि नविज. हृतीयदगमक्रिकालमपिजीवशयदुनयसूनि सतः। पितार्कवृधदिमकनाशकलेश
 ॥ ॥ दलमवहृतीयव याददृष्टिमूदाहताशानवयसममथेव मर्द्धदृष्टिवनानना वदुर्थवाहमदवि यादाना
 ४पनिकीर्तिताशसफमपनिपूरुव रुलमवयकल्ययत् ॥ ॥ गणसन्नानिदवलि नयन्त्रिकि गृहाहमाश हृतीय ३१
 दलमवार्किः यन्त्रन्युपु रुलप्रदशिकालगमदुन्येव वदुर्थसमयाः कजः गणः सफमगमदवि यन्त्रिकि
 हसलमाशः निदृष्टिरुदशः ॥ यादा ॥ १३ ॥ द्विपादाहृता विपादा ७१५ पूरु ॥ १॥ दृष्टि ॥ ॥ युर्दिदुर्जीयुर्दवि
 लग्नसंको नरुसुलसुथदिवाकनानी सोनासुगः युक्निगा कनी तुजलकिता वृगवलो रुवगी ॥ लग्नादिदिग्

रुवदूपयया रिधा वदुर्थसमयाः संक्रा वदुनयसूतावृषेः कलुवदुष्टयं कंटकश्च लग्नाददग
 मवदुर्थनी। संक्रायनतः यज रुवमाया किममथ कुमसः तनूर्द्धनश्च ताव सुदत्यया निपूरुथ
 जायानृसूदमकमा यद्ययं लग्नतः क्रमात्। गकिथ्यो नूय गृह्यनिहाखलका मयवविवनालि। पुन
 मानरुचययमिनि कथितायवनालिनामानि ॥ अन्यसंक्रा ॥ ॥ यायाहावः स्वामिदृष्टायतावा सोमो वा
 स्यारुस्यत स्याकिवृद्धिः यापे नवंतस्य हावस्य हानि निदृष्ट्यां युक्तगंजमतावा ॥ ॥ हावादादगवि
 या लग्नममशुदुर्थक। दलमयनिकदुर्ल नागिश्वाधिवलानिय ॥ हृतीयषट्दलमला रुवापययासं
 कानवमं यदुर्मवति रिक्तां पनिकीर्तिनी याता लदिवर्कवम वधु संक्रा वदुर्थक। रिक्तां पन

[illegible][illegible]

ममप्रिया॥ यं श्रीचक्रनक्षत्रद्विचक्रवा॥ मयायाः प्रसादात् सध्वनिमकवा॥ कथावलाङ्ग्याः प्रवृष्टादयावि
मिथूनाः कथितास्तु एव। नीर्वाद्यादिनवलानि नान्यमूरुयतामीनः॥ गंगाधिकर्की मिथूनाः समृग्ग
निगम्याः प्रवृष्टादयाविमिथूनाः कथितास्तु एव। नीर्वाद्यादिनवलानि नान्यमूरुयतामीनः॥ गंगाधिकर्की मिथूनाः समृग्ग
॥ प्रथूनामयूग्मैः॥ नीर्वाद्यादयः प्रवृष्टादयः॥ ॥ मूरुगसितहवितायाटलयाः प्रविदिशः सिततनयिषः॥ विः
मलकर्कूनवकर्मलिना नूययायुधसंस्थः॥ लाहितनितलुकहविताः घाटलयनिधुमयाः प्रविदिशः॥ कर्क
॥ कनकाभूषिताः कर्कूनवकर्म॥ स्ववर्णस्यः॥ वर्णः॥ ॥ ननयः प्रवृष्टिकजलजा यथकर्मयागुदिगादिग
वलिनः॥ निमिदिवसं संध्यायां मृगयूग्माः प्रालिकर्किसमाः॥ नृपदुष्टादकीटायाः वलिनः॥ यान्दक्षिणप

कृताद्यानवात्मकाः॥ स्वर्गवाग्मयुदवर्णि वर्जलमूर्तिस्तुतः॥ यच्छायाजन्मकालवा. यतः॥ सगुरुकाय
कः॥ नर्वागः॥ ॥ सर्वेषामयमूर्वाणां स्वर्काद्याद्यादनामकाः॥ अयायूर्ध्वमूर्द्धिस्तु. नागीनामस्तकभूतः॥ द्वाद
शाः॥ कृजार्किगुनसोम्यानी. रागाः॥ कृकस्यवक्रमाता. यश्चयश्चयस्यकार्थ. दुल्याडाऊवनामिष्टः॥ शिं ग
लायत्ययादत. यग्मनामिष्टकीर्तिताः॥ वद्यदार्थः॥ समासन. दलितः॥ सूनसूनद्वि॥ शिं लायवर्जः॥ वद्य
दार्थः॥ ॥ भयालिमिधूर्नमृगुद्विमीनकुलाद्युधरुवायधनकर्किः॥ घटहर्कन्यायूर्वा. सफालानारुव
मीनः॥ सफालः॥ ॥ वद्विहोनाशिलमी. नृतयदानाद्विस्तफति समताः॥ लिफानामस्तदनागता. निघनिह
रुनः॥ स्वगृहान्. विषमममताः॥ यथा. समरुभूदुलादिताः॥ मातायूजाः॥ गजयत्. समताः॥ स्वस्त्यादा॥ ना

[illegible]

साधकः॥ धुल न गुरु धुल जाय प्रहल न अशुल ॥ ॥ अयने धन संशुद्धो सदक्ष पत्रया दया सर्वाः
नरुयसी सिद्धिः सदा वापचय किं ॥ वृधदाय न रूकि दमदाय न रूगुशल दमक दुधाया र्ण गु
नूलग्नयया हनि ॥ किं कर्तुं किं गहा सद्य यदि कर्तुं वरु सति ॥ नरुमान नूयूथानी दय न कोपक न नी ॥
दाया र्ण गत मूय हनि साम पूरु ॥ कर्तुं सद्ध न मया हाय दर्थ मूर्ति ॥ दय का द्विगुण मिदं पून चली ॥
यान् आवा र्थं पमय निल कमय वर्थ ॥ ॥ उदिनः स्वगुरु सुख मिश्र पद हनि तापि वा मिश्र वर्ण दह
दय सगुरु सवल सुत ॥ स्वा चरिका ल स्वगुरु सुद कल सुवर्ण ॥ रुल संयूयै धुधान दलया द
त्य निष्कली ॥ स्वा चयूयै ववर्ण नहि न स्व चिका ल स्व रुद्र नाग लाना यय नपि नि सुद न हग मिश्र रुं धि

[illegible]

नित्यं ह्यसमीपं ॥ दिनस्य यः पश्येत्तदा विहागं वा कुक्कुथं तदिमं कूर्कं मानं न दत्तं नाथ प्रतिमं न
 कूर्कं मोक्षार्थं काकुत्स्थस्य कर्मनाशं शूद्रं यं यदप्यहो वाग्व्येवमूर्कं हतिर्मांसाः सविक्रयतमा
 न्यायामलाभ्यर्थं यत्ना ॥ मूढा वाग्व्येवमूर्कं वदन्त्येव जिह्वा न दत्तं न मूर्कं सप्तकर्मगुणस्य
 तां ॥ मूर्कं ॥ ॥ श्राव्यं न कर्तुं न किञ्चिन्न वा दत्तं स वाक् सौख्यं पितृणां न किञ्चिन्न न च दत्तं
 दूषयिष्यति ॥ पितृणां न दत्तं न वा दत्तं सौख्यं जीवः शोणः कर्णः स विदुः तनयः वक्तुं नीयो मूर्कः
 ॥ वाग्व्येवमूर्कं ॥ ॥ यो बालिका नोदति तां स्य मित्रं कर्णः स तां सानुदत्तं यदुर्थं सा विदुः वेना
 जकसीति नो यः गन्धर्वनामा रिजिदश्च मर्त्यान् ॥ अहिंसा कथं यत्नो विदुः ॥ यो नोदतं न मूर्कः वदन्त्येव

आश्रुति मधुरगसंज्ञित उक्ता याश्च मः सच रुचक नृपास्यशात्रोद्गमध्वनामाद्विजयत्रिरुवासा नाला
 वायुजनी नकाधाताथ सोम सुदनक मलमावाक निःपोमनामा वेकल्यन्यः समीपानि निति निति निग
 वानि एषा मी मूक र्काः या कादिः यश्च सखा मूतिरिति दयूना पार्थविका यवी लेः ॥ वेनाज नामा विजयः
 पिता स्वः सा विरुमे वाव रिद लघ्वा सर्वार्थ सिद्धोः कथिना मूक र्काः मो कर्हि के नरु धूना विरिः ॥ मूक
 मूतिरिति दाक्यः कला दकिः हि मूखयान म कना कीर्तिता पत्र क कस्य स्र निरि यथिना म रि म तार्थ सि
 द्धि दशा ॥ श्री मत्स्य ध्या मति का कः किञ्चिदुक्तं नाना का विजयाना मया गायं सर्व कार्य म साधकः ॥
 नि मूक रूप क नली ॥ विवाह दकिः मा गायका सर्वार्थ साधका मूक र्का रि जि दा स्य तु विमूक स्य द

उज

मपत्त ॥ दिन म भगत्सूर्य नरु कय च वा सना च क मा दा य भे विरुः सर्व दार्प निरु कति ॥ मूक रि जि मू
 क र्का ॥ ॥ यत्र मदि न दिन मान विहीनं सुक सुता छित यं व विरु कः सा न व ठ न दु नि र्मि त म
 न सा च रु वं दिन म भ म क या ॥ ॥ मया पाद सो प न न क वं ग न र्का ॥ ल द्वा क द टिका क या ला
 वा क व य नाः ॥ म न श क क टा दि पा द क या दि न ॥ पा द क या द्वि गु ण क ता व रु द्ग स म चि न श य क न न व क
 न रा ग न द्वा द क न ग य न ॥ म क ना दि क क ट य र्का न पा द क या ॥ न रा दि नि ना रा क नि ना रा दि न ना क क
 स का रु द्वि गु ण क ता ना रो व ला वि धी य न ॥ वा न स या व ला ॥ ॥ न वि रु दि नि ना रा क नि ना रा दी तु रा क क
 नि ना रि कु म रु द्वि र्वा नि नि रु न रु वि श्र ति ॥ ॥ य र्शि वि र्वा य च क मा प दि र्वा न दे व ल न मू क र्का पि कार्थ दि

[illegible]

विरक्तवदकनयनमालम्ब्य। यूर्ध्वदिक् दिवसगतं दक्षिणदिक् दिवसगतं। रागं वा निधिवा निधिवा निधि
निधिवा कर्ममयं यूनः। यूर्ध्वदिक् दिवसगतं दक्षिणदिक् दिवसगतं। रागं वा निधिवा निधिवा निधि
कर्मकादिनायदत्तं दिवसकादिनायदत्तं दिवसकादिनायदत्तं दिवसकादिनायदत्तं दिवसकादिनायदत्तं दिवसकादिनायदत्तं
लसमन्विता। यद्वदकनयनमालम्ब्य। यूर्ध्वदिक् दिवसगतं दक्षिणदिक् दिवसगतं। रागं वा निधिवा निधिवा निधि
द्वकनयनमालम्ब्य। यूर्ध्वदिक् दिवसगतं दक्षिणदिक् दिवसगतं। रागं वा निधिवा निधिवा निधि
ऊर्ध्वदिक् दिवसगतं दक्षिणदिक् दिवसगतं। रागं वा निधिवा निधिवा निधि
दिवसकादिनायदत्तं दिवसकादिनायदत्तं दिवसकादिनायदत्तं दिवसकादिनायदत्तं दिवसकादिनायदत्तं दिवसकादिनायदत्तं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ तिथिगुणितं नक्षत्रीयविमर्शं यमनक्षितं सितयकविनिर्णयं विषयगणकवि-
राजितं लब्धं विद्वद्विषयमकमप्यक्षरं ॥ तिथीकगुणितं नाशितं नक्षत्रीयं नित्यं विषयान्तरं लब्धं
उदयास्तविषयकं ॥ तिथ्येव नक्षत्रं यथा विद्वत्तदनुयातयत् ॥ घटिकेकद्विविकलाचार्यगणार्थविष-
यः ॥ यथायथा ॥ ॥ दिनाहता निमित्तं यमावितायमानिता ॥ नितानितं नन्दके विषयस्त-
मोरुवत् ॥ ग्रहलक्षणादिवानाथ तिथिनाथश्च पूज्यमायागमाथश्च वक्ष्ये व नक्षत्रानियुनक्षत् ॥ वली ॥
तिथ्येव नक्षत्रं यथा कनकलविद्वत्संज्ञितं नक्षत्रं यमसूर्यानि विषयान्तरं विद्वत्तदनुयातयत् ॥ यथायथा ॥
नक्षत्रं यमसूर्यानि विद्वत्तदनुयातयत् ॥ यथायथा ॥

विष्णुसर्वरुचाग्ने सङ्गताक्षानसूर्यः ॥ वेधनिधितिथ्यात्तद्यद्व्यागदिवायुः ॥ गुरुकर्मनकर्तृ
कनकर्मयुगलस्य ॥ ॥ दलकृष्णवदुर्ध्वं सङ्गाकोविष्टिवेधतो यमसार्यवृत्तीनां कनकर्मयुगलस्य
ना ॥ कनकर्म ॥ ॥ द्वितीयाधनूमीनश्रुवदुर्ध्वं वृषकर्तृया ॥ मषककर्तृया ॥ षष्ठी कन्यामिथूनवाशमी
॥ दलमीवृषिकसिंहः मकरद्वयदमीकुला ॥ एतामुतिथ्यादग्न्या ॥ वर्जनीयायुयवतशा ॥ एकाक्षनादिनकन
मिथ्याद्वितीया ॥ पूर्वधनू ॥ सरुतथा वृषकर्तृया ॥ कर्कश्यामिथूना ॥ वलथामृगन्द ॥ कात्याकुलाम
कन्यामृगवन्दिदग्न्या ॥ षष्ठ्याश्विनस ॥ काष्ठा ॥ वृषकर्तृया ॥ गुरुविश्वदद्व्याकनिथ्या ॥ भयाकादिदहकुमा
त ॥ ॥ इति मासदग्ना ॥ ॥ आद्यावतसु ॥ कियपूर्वकाना ॥ मर्मावतुर्ध्वमिदृषश्मीत्यात् ॥ यनायन ॥ वीपनतस्य

व. लक्ष्मणनाम नक्षत्रातिथिः ४५॥ मयादिकं विना वर्या विकारं विना वृत्तौ सकृन्निवृत्तिथयः ४६॥
 पादा रुना रुनी ॥ ४७॥ तिथिः ४८॥ ॥ मकीलो नस्यवान् यनिह नति सदा सफमी रुद्वर्गवन् मूख्यादिव
 मकीवृषदि ननवमी रौमदारे दशम्या ॥ नकादध्यां गभा ॥ कदभा गतकि न ॥ वरुथ द्वादमी च सार्धे निधविध
 यामुनिजन सक्तो ४ कर्कवा स्यादियाग ४॥ तिथिः ४९॥ वानस्यवपु र्संख्यवान् यादभा मूर्ध्नि लन रुत सति ॥ ५०॥
 न ४ सयाग ४ क क वा रिष्म न क विवर्जनी या ४ गुरु कर्म सूखवी ॥ द्वादमी दहतं रान् गमी भका दमी तथा ॥ द
 शमी रुनि पूषा वानदग्ध ४ ये की र्ति ४॥ ५१॥ तिथिः ५२॥ कर्कवा याग ४॥ वानदग्धवतिथयः ॥ ५३॥ सफम्यादि नक
 नवा सनायका स्यात् वानस्यतिथिदिध नदनस्य सर्वलामानि विदुदिन ४ सयाग ४ स्या ४ गुरु रुत

[illegible]

ककतिथयः कमात् ॥ मद्याविमखा म्मादाथ मूलान्वयनिनादिनी ॥ पूर्ववारावविज्ञया सूर्यद्विधमघं
 टकः मद्याकं वा नमिना विमखा म्मादावरी मधवृधवमूलजीवमूपरुहगुनादिनी यमनोवताथयः
 मद्यं टयागः ॥ द्वादशीयमद्यादित्या विमखेकादलीगमी ॥ दमम्यामनकं वादा वृधमूलहृतीथक ॥ मत्
 रिषागुनूः मदी द्वितीयात्रादिनी रुगुः मफमीलो नमायादा यमदं क्रायकीर्तिता ॥ यमदं क्रा ॥ मद्या
 नवीचन्द्रदिनविमखाडाथ मूरो ममनिजवमूल मूलनगुने युक्तदिनवधता रुक्मः मनीच यमद्यं टया
 म ॥ कहीयावस्वसंयुक्ता मूर्काया मूकमनवा यागमयं यमद्यं टया सर्वकर्मसुगर्हितः ॥ रुक्ममयम
 द्यादूरा मूकमयमवातथ मूना हलिका रुमिपूतल मूननाधतथे ववा म्मादावृधसंयुक्ता डलनाख

३२

सुपीनथा गुबूलनवती मूल स्वातिगुक्ता मदिनी ॥ एवमरु नूकूल मत्तमात्राथे ववायमद्यं टय
 सिद्धाय वर्जितः सर्वकर्मसः ॥ सोमानूधो नोरुवली लाङ्काडा सोममवयागुमार्तगमिनामूना स्वातिगुक्ता
 दितिरुथा ॥ मूकयाद मूरिर्मद मद्याल्लया नवार्दिनादिनायारा रुथयन्त्र यमद्यं टयकीर्तितः ॥ साम
 यूरुमद्याकं धननिसूतदिनवाविनीवानूनाध स्वातीगुक्ता वृधार्तवज्जलगरिषा नवतीक विनूद ॥ मा
 यावन्मयवला मजलरुलकमिः निरुलायूरुका ल विद्यानं रुद्रमूर्खः यनिनयविधवाया मद्यं टययाग
 ॥ म्मादिनवा नरुवली विमखा साममूविनिडरुनायारा ममलमद्या लतरिषडदाय वृधमूडा पूर्ववामु
 नाया गुबूलवला मतरिषाडदाय गुक्ता कृष्णादिनी नागा ॥ मूलवा सोमपनियान उयमद्यं थानिथ

यजाना॥ यमयंठयाग॥ ॥ द्वितीयाधनूमीनति॥ द्वितीयाश्रनूनाधन वितीनिहकना॥ यंयमीमद्यसंयूका
 रुक्ममूलवसकमी॥ मूखमीनाहिनीयेव विवाहातीतयादनी॥ एषयागमूयकार्यं समासमनलधुर्वी॥ य
 मयंठयाग॥ ॥ सफम्यानिवितामननविवावागमूयमात॥ कलिकाख्याहियागमयं वरुं यत्सर्वकर्मसू॥ ॥
 कलिकयाग॥ ॥ एतियशूरुवावासा॥ यंयमीकलिकानथा॥ पूर्वरादयदासुस्यां दगमीनाहिनी तथा॥ द्वादर्थ
 रसयागव॥ पूर्वरादुगुयादनी॥ एतवसमहाकर्षं मूनीनिविननन्दन॥ ॥ ॥ विननन्दनयाग॥ ॥
 पुकनेदावधेरुदा॥ मनोविकाकजजया॥ गुनूधुवसंयूका॥ उलाकसाधयद्वी॥ नदाहगोशामस
 तवरुदा॥ कजजयाहयसूगनसका॥ एषुगुनीयंयसूर्ययवता॥ ॥ उरावहा॥ सर्वमुखयदाभानंदाह